



भारत का राजपत्र The Gazette of India

सी.जी.-डी.एल.-अ.-29102020-222812
CG-DL-E-29102020-222812

असाधारण
EXTRAORDINARY
भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)
PART II—Section 3—Sub-section (ii)
प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 3426]
No. 3426]

नई दिल्ली, बुधवार, अक्तूबर 28, 2020/कार्तिक 6, 1942
NEW DELHI, WEDNESDAY, OCTOBER 28, 2020/KARTIKA 6, 1942

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 27 अक्तूबर, 2020

का.आ. 3880(अ).—मंत्रालय की प्रारूप अधिसूचना का.आ. 118(अ.), दिनांक 6 जनवरी, 2016, के अधिक्रमण में, अधिसूचना का निम्नलिखित प्रारूप, जिसे केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) की धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) तथा उपधारा (3) के साथ पठित उपधारा (1) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, जारी करने का प्रस्ताव करती है को, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) की अपेक्षानुसार, जनसाधारण की जानकारी के लिए प्रकाशित किया जाता है जिनके उससे प्रभावित होने की संभावना है, और यह सूचित किया जाता है कि उक्त प्रारूप अधिसूचना पर, उस तारीख से, जिसको इस अधिसूचना को अंतर्विष्ट करने वाले भारत के राजपत्र की प्रतियां जनसाधारण को उपलब्ध करा दी जाती हैं, साठ दिन की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् विचार किया जाएगा;

ऐसा कोई व्यक्ति, जो प्रारूप अधिसूचना में अंतर्विष्ट प्रस्तावों के संबंध में कोई आपत्ति या सुझाव देने का इच्छुक है, वह विनिर्दिष्ट अवधि के भीतर, केन्द्रीय सरकार द्वारा विचार किए जाने के लिए अपनी आपत्ति या सुझाव सचिव, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, इंदिरा पर्यावरण भवन, जोर बाग रोड, अलीगंज, नई दिल्ली-110003 को लिखित रूप में या ई-मेल esz-mef@nic.in पर भेज सकता है।

प्रारूप अधिसूचना

साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान केरल राज्य के पालाक्कड (मन्नारक्कड तालुक) और मालापपुरम (नीलमबूर तालुक) जिलों में उत्तर अक्षांश 11° 2' और 11° 13' और पूर्व देशांतर 76° 24' और 76° 32' के बीच स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान को पहले अधिसूचना सं. 291 दिनांक 18 मई, 1914 के अनुसार 1914 में रिज़र्व वन अधिसूचित किया गया था और दिनांक 19 जून, 1914 को एसटी. जॉर्ज राजपत्र में प्रकाशित किया गया था। वर्ष 1984 में, विधि की तय प्रक्रिया से गुजरने के बाद, केरल राज्य सरकार अधिसूचना सं. 5462/एफएसए 3/82/एडी दिनांक 15 नवंबर, 1984 और राजपत्र सं. 1005, वॉल्यूम XXIX में दिनांक 23 नवम्बर, 1984 को प्रकाशित की गई, वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 (1972 का 53) के 35 की उप-धारा (4) के प्रावधानों के अधीन साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान के क्षेत्रफल का विस्तार 89.52 वर्ग किलोमीटर अधिसूचित किया गया। 2007 में, जी.ओ.(एम एस) 36/07/एफ एवं डब्ल्यूएलडी दिनांक 7 फरवरी, 2007 के तहत बफर जोन के रूप में इस संभाग में 148 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल जोड़ा गया था;

और, साइलेंट वैली पठार नीलगिरी के दक्षिण-पश्चिम कोन में है, दक्षिण की ओर ढलान के साथ यह पहाड़ियों से घिरा हुआ है। केरल में पश्चिमी घाटों के सम्पूर्ण विस्तार में उच्च वर्षा क्षेत्र और मध्य ऊंचाई वाले लहरदार इलाकों के तटवर्ती और गैर-तटवर्ती पारिस्थितिकी प्रणाली के रूप में साइलेंट वैली का समरूपी इस क्षेत्र में और कोई नहीं है। भू भाग सामान्यतः खड़ी कगार और कई पहाड़ियों के साथ लहरदार है। 2,383 मीटर (अनर्गीदा चोटी) की उच्चतम चोटी के साथ समुद्र तल (एएसएल) से ऊपर 900 मीटर से 2,300 मीटर तक ऊंचाई है। साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान, नीलगिरी जीवमंडल रिज़र्व के 5500 वर्ग किलोमीटर कोर क्षेत्र का केन्द्रीय और प्रमुख का क्षेत्र है। यह हाथी परियोजना के अधीन गठित नीलम्बूर हाथी रिज़र्व का भी अभिन्न भाग है जो कि 1419 वर्ग किलोमीटर है और यह विश्व धरोहर स्थल का भी भाग है;

और, साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान में वनस्पति और जीवजंतु विविधता समृद्ध है और उद्यान से एंजीयोस्पर्म की लगभग 966 प्रजातियां डिकोटस् की 430 जेनेरा और 33 परिवारों में प्रजातियों सहित ऑर्किड की 108 प्रजातियां और मोनोकोटस् के 139 जेनेरा और 21 परिवार, शैवाक की लगभग 77 प्रजातियां और पेटीडोफाइटस् की 77 प्रजातियां प्रतिवेदित की गई हैं। जीवजंतु विविधता के अंतर्गत स्तनधारियों की 41 प्रजातियां, पक्षियों की 211 प्रजातियां सहित 15 पश्चिमी घाट स्थानिक, सरीसृपों की 42 प्रजातियां, उभयचरों की 46 प्रजातियां, ताजे जल मछली की 12 प्रजातियां, तितलियों की 92 प्रजातियां और मोथ की 250 प्रजातियां अभिलिखित की गई हैं;

और, राष्ट्रीय उद्यान में संवेदनशील, दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटापन्न प्रजातियों में बाघ (पैंथेरा टिगरिस), तेंदुआ (पेन्थेरा प्रड्यूस), धोल (कुओन अलपिनेस), सिंह पुच्छ मकाक्यू (मकाका सिल्वेन्स), साल (मानिस क्रैसिकाउडाटा), नीलगिरी मारटेन (मार्टेस गवाटर्किंसी), नीलगिरी वानर (ट्रेचीपिटैकस जोहनी), वन केन कछुआ (विजायाचेलयस सिलवैटिकस), वॉयनाड बुशफ्रोग (स्यूडोफिलॉटस वायनाडेंसिस), पोनमुडी बुशफ्रॉग (रोरैस्टेस पोनमुडी), रेड टोर्नेट टोड (घैटोफ्राइन रूबिगिना), मालाबार ट्री टोड (पैडोस्टाइब्स ट्यूबरकुलोसस), आदि उपलब्ध हैं;

और, साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान की संवेदनशील, दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटापन्न प्रजातियों में टोक्सोकार्पस पालघाटेंसी, कोस्किनियम फेनेस्ट्राटम, कैसिन केदारनाथी, इप्सिया मालाबारिका, इम्बेलिया गार्डनेरियाना, हेदियोटिस हिरसुतिसिमा, नोस्टोलाचमा क्रैसिफोलिया, मुरदान्निया लांकेओलाटा, सिजेनियम पैलेंसेंस, पालघाटेंसे, फिकस, बेडोमिया, फिकस गुट्टाटा, हेलिचरयसम विघटी, ल्लेक्स ग्राडनेरिअना, इसोडोन रिबुलारिस, होहेनाक्वेरी, थुबेरगिया बिकोलोर, अस्पेरागुस फयसोनी, बुलबोफयल्लुम औरैउम, सीक्ली फिस्सिकालयक्स, डेरिस बेंथामि, होपेया गलाबरा, होपेया राकोफलोइया, इम्पाटीइंस डेनिसोनी, मेमेकयलोन फ्लावेस्केंस, पोगोस्टेमोन गरडनेरी,

पोगोस्टेमोन वेस्टीटस, पसयचोटरिया ग्लोबिकेफल, योउंगिया नीलगिरीइंसिस, अनाफलिस बेड्डोमेइ, अनाफलिस नैलगेर्याना, आदि हैं;

और, साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान की स्थानिक प्रजातियों में कस्सिने केदारनाथी, इचथ्योफिस लोंगीकेपहलुस, (लॉन्ग-हेडेडकैसिलियन), दुत्तापहरयनुस साइलेंटवैलीइंसिस, (साइलेंट वैली टोड), माइक्रीक्सालुस सैरांधरी (सैरांधरी डांसिंग फ्राॅग), मिक्रीक्सालुस थम्पी (थम्पी डांसिंग फ्राॅग), रोर्चेस्ट्र लीचिया (लेचियप्पन बुश फ्राॅग), रोर्चेस्टेस साइलेंटवैलीइंसिस (साइलेंट वैली बुशफ्राॅग), आदि हैं;

और, साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान कुंथीपुझा का मुख्य जलक्षेत्र है जो कि भारतपुझा की सहायक नदी है, पालाक्कड और मालाप्पुरम जिलों में पीने और सिंचाई उद्देश्य के लिए जल का मुख्य स्रोत है। यह उद्यान पश्चिमी घाट स्थानिक प्राइमेट, के लुमप्राय लायन-टेल्ड मैकाक की कुछ उपलब्ध संख्या को आश्रय प्रदान करने वालों में से एक है;

और, जैव-भौगोलिक रूप से, साइलेंट वैली और पश्चिमी घाट के निकटवर्ती वन “पारिस्थितिकी द्वीपों” का प्रतिनिधित्व करते हैं, और इस एकांत का इसलिए, साइलेंट वैली और निकटवर्ती क्षेत्रों के जीवजंतु और वनस्पतियों के अवशिष्ट प्रकार को संरक्षित करने पर प्रभाव पड़ा है, जैसा कि वनस्पति और जीवजंतु के कई प्राचीन समूहों की विद्यमानता से प्रदर्शित होता है;

और, साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान के चारों ओर के क्षेत्र को, जिसका विस्तार और सीमाएं इस अधिसूचना के पैराग्राफ 1 में विनिर्दिष्ट हैं, पारिस्थितिकी, पर्यावरणीय और जैव-विविधता की दृष्टि से पारिस्थितिकी संवेदी जोन के रूप में सुरक्षित और संरक्षित करना तथा उक्त पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उद्योगों या उद्योगों की श्रेणियों के प्रचालन तथा प्रसंस्करण को प्रतिषिद्ध करना आवश्यक है;

अतः अब, केन्द्रीय सरकार, पर्यावरण (संरक्षण) नियमावली, 1986 के नियम 5 के उपनियम (3) के साथ पठित पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 (1986 का 29) (जिसे इसमें इसके पश्चात् पर्यावरण अधिनियम कहा गया है) की उपधारा (1) तथा धारा 3 की उपधारा (2) के खंड (v) और खंड (xiv) एवं उपधारा (3) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, केरल राज्य के पालाक्कड और मालाप्पुरम जिले के साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान की सीमा के चारों ओर शून्य से 9.8 किलोमीटर तक विस्तारित क्षेत्र को पारिस्थितिकी संवेदी जोन (जिसे इसमें इसके पश्चात् पारिस्थितिकी संवेदी जोन कहा गया है) के रूप में अधिसूचित करती है, जिसका विवरण निम्नानुसार है, अर्थात् :-

1. पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार और सीमा.-(1) पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान की सीमा के चारों ओर शून्य से 9.8 किलोमीटर तक विस्तृत है और पारिस्थितिकी संवेदी जोन का क्षेत्रफल 148 वर्ग किलोमीटर है। मुकुरुथी राष्ट्रीय उद्यान के साथ सीमा साझा होने के कारण साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान की सीमा की ओर शून्य विस्तार प्रस्तावित है। राष्ट्रीय उद्यान की विभिन्न दिशाओं में पारिस्थितिकी संवेदी जोन का विस्तार नीचे दिया गया है:-

दिशा	विस्तार
उत्तर	0 - 1.5 किलोमीटर
उत्तर - पूर्व	2.6 - 5.6 किलोमीटर
पूर्व	4.3 - 6.7 किलोमीटर
दक्षिण - पूर्व	4.0 - 9.8 किलोमीटर
दक्षिण	0.5 - 5.6 किलोमीटर
दक्षिण - पश्चिम	1.8 - 4.9 किलोमीटर
पश्चिम	1.0 - 4.1 किलोमीटर
उत्तर- पश्चिम	1.4 - 3.8 किलोमीटर

- (2) साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान और इसके पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण **उपाबंध -I** के रूप में संलग्न है।
- (3) सीमा विवरण और अक्षांश और देशांतर के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन को सीमांकित करते हुए साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान के मानचित्र **उपाबंध -IIक** और **उपाबंध -IIख** के रूप में संलग्न हैं।
- (4) पारिस्थितिकी संवेदी जोन और साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान की सीमा के भू-निर्देशांकों की सूची **उपाबंध -III** की सारणी **क** और सारणी **ख** में दी गई है।
- (5) मुख्य बिंदुओं के भू-निर्देशांकों के साथ पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची **उपाबंध-IV** के रूप में संलग्न है।

2. पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना.—(1) राज्य सरकार, द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के प्रयोजन के लिए, राजपत्र में अंतिम अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख से दो वर्ष की अवधि के भीतर, स्थानीय व्यक्तियों के परामर्श से और इस अधिसूचना में दिए गए अनुबंधों का पालन करते हुए, राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदनार्थ एक आंचलिक महायोजना बनाई जायेगी।

- (2) राज्य सरकार द्वारा पारिस्थितिकी संवेदी जोन के लिए आंचलिक महायोजना इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट रीति से तथा प्रासंगिक केंद्रीय और राज्य विधियों के अनुरूप तथा केंद्र सरकार द्वारा जारी दिशा निर्देशों, यदि कोई हों, के अनुसार बनायी जाएगी।
- (3) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी और पर्यावरण संबंधी सरोकारों को शामिल करने के लिए इसे राज्य सरकार के निम्नलिखित विभागों के परामर्श से बनाया जाएगा, अर्थात्:-
 - (i) पर्यावरण;
 - (ii) वन और वन्यजीव;
 - (iii) कृषि;
 - (iv) राजस्व;
 - (v) शहरी विकास;
 - (vi) पर्यटन;
 - (vii) ग्रामीण विकास;
 - (viii) सिंचाई और बाढ़ नियंत्रण;
 - (ix) नगरपालिका;
 - (x) पंचायती राज;
 - (xi) लोक निर्माण विभाग।
- (4) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, आंचलिक महायोजना में वर्तमान में अनुमोदित भू-उपयोग, अवसंरचना और क्रियाकलापों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया जाएगा तथा आंचलिक महायोजना में सभी अवसंरचनाओं और क्रियाकलापों में सुधार करके उन्हें अधिक दक्ष और पारिस्थितिकी-अनुकूल बनाने की व्यवस्था की जाएगी।
- (5) आंचलिक महायोजना में वनरहित और अवक्रमित क्षेत्रों के सुधार, विद्यमान जल निकायों के संरक्षण, जलग्रहण क्षेत्रों के प्रबंधन, जल-संभरों के प्रबंधन, भू-जल के प्रबंधन, मृदा और नदी के संरक्षण, स्थानीय

जनता की आवश्यकताओं तथा पारिस्थितिकी एवं पर्यावरण के ऐसे अन्य पहलुओं की व्यवस्था की जाएगी जिन पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

- (6) आंचलिक महायोजना में सभी विद्यमान पूजा स्थलों, ग्रामों एवं शहरी बस्तियों, वनों की श्रेणियों एवं किस्मों, कृषि क्षेत्रों, उपजाऊ भूमि, उद्यानों एवं उद्यानों की तरह के हरित क्षेत्रों, बागवानी क्षेत्रों, बगीचों, झीलों और अन्य जल निकायों की सीमा का सहायक मानचित्र के साथ निर्धारण किया जाएगा और मौजूदा और प्रस्तावित भू-उपयोग की विशेषताओं का ब्यौरा भी दिया जाएगा।
- (7) आंचलिक महायोजना में पारिस्थितिकी संवेदी जोन में होने वाले विकास का विनियमन किया जाएगा और सारणी में यथासूचीबद्ध पैराग्राफ 4 में प्रतिषिद्ध एवं विनियमित क्रियाकलापों का पालन किया जाएगा। इसमें स्थानीय जनता की आजीविका की सुरक्षा के लिए पारिस्थितिकी-अनुकूल विकास का भी सुनिश्चय एवं संवर्धन किया जाएगा।
- (8) आंचलिक महायोजना, क्षेत्रीय विकास योजना की सह-कालिक होगी।
- (9) अनुमोदित आंचलिक महायोजना, निगरानी समिति के लिए एक संदर्भ दस्तावेज होगी ताकि वह इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार निगरानी के अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सके।

3. राज्य सरकार द्वारा किए जाने वाले उपाय.- राज्य सरकार इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित उपाय करेगी, अर्थात्:-

(1) **भू-उपयोग.-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में वनों, बागवानी क्षेत्रों, कृषि क्षेत्रों, मनोरंजन के लिए चिन्हित उद्यानों और खुले स्थानों का वृहद वाणिज्यिक या आवासीय परिसरों या औद्योगिक क्रियाकलापों के लिए प्रयोग या संपरिवर्तन अनुमत्य नहीं किया जाएगा:

परंतु पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर भाग (क), में विनिर्दिष्ट प्रयोजन से भिन्न प्रयोजन के लिए कृषि और अन्य भूमि का संपरिवर्तन, मानीटरी समिति की सिफारिश पर और सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन से क्षेत्रीय नगर योजना अधिनियम तथा यथा लागू केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों के अधीन तथा इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुसार स्थानीय निवासियों की निम्नलिखित आवासीय जरूरतों को पूरा करने के लिए अनुमत्य किया जाएगा जैसे:-

- (i) विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ करना और नई सड़कों का निर्माण करना;
- (ii) बुनियादी ढांचों और नागरिक सुविधाओं का संनिर्माण और नवीकरण;
- (iii) प्रदूषण उत्पन्न न करने वाले लघु उद्योग;
- (iv) कुटीर उद्योग एवं ग्राम उद्योग; पारिस्थितिकी पर्यटन में सहायक सुविधा भण्डार, और स्थानीय सुविधाएं तथा गृह वास; और
- (v) पैराग्राफ-4 में उल्लिखित बढ़ावा दिए गए क्रियाकलाप:

परंतु यह भी कि क्षेत्रीय शहरी नियोजन अधिनियम के अधीन सक्षम प्राधिकारी के पूर्व अनुमोदन के बिना तथा राज्य सरकार के अन्य नियमों एवं विनियमों एवं संविधान के अनुच्छेद 244 के उपबंधों तथा तत्समय प्रवृत्त विधि, जिसके अंतर्गत अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासी (वन अधिकारों की मान्यता) अधिनियम, 2006 (2007 का 2) भी आता है, का अनुपालन किए बिना वाणिज्यिक या औद्योगिक विकास क्रियाकलापों के लिए जनजातीय भूमि का प्रयोग अनुमत्य नहीं होगा:

परंतु यह भी कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाली भूमि के अभिलेखों में हुई किसी त्रुटि को, मानीटरी समिति के विचार प्राप्त करने के पश्चात्, राज्य सरकार द्वारा प्रत्येक मामले में एक बार सुधारा जाएगा और उक्त त्रुटि को सुधारने की सूचना केंद्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को दी जाएगी:

परंतु यह भी कि उपर्युक्त त्रुटि को सुधारने में, इस उप-पैरा में यथा उपबंधित के सिवाय, किसी भी दशा में भू-उपयोग का परिवर्तन शामिल नहीं होगा।

(ख) अनुप्रयुक्त या अनुत्पादक कृषि क्षेत्रों में पुनः वनीकरण तथा पर्यावासों की बहाली के प्रयास किए जाएंगे।

(2) **प्राकृतिक जल स्रोत.-** सभी प्राकृतिक जलमार्गों के जलग्रहण क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और आंचलिक महायोजना में उनके संरक्षण और बहाली की योजना सम्मिलित की जाएगी और राज्य सरकार द्वारा दिशा-निर्देश इस रीति से तैयार किए जाएंगे कि उसमें ऐसे क्षेत्रों में या उसके पास विकास क्रियाकलापों को प्रतिषिद्ध और निर्बंधित किया गया हो।

(3) **पर्यटन एवं पारिस्थितिकी पर्यटन.-** (क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी नए पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलाप या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार पारिस्थितिकी संवेदी जोन संबंधी पर्यटन महायोजना के अनुसार अनुमत्य होगा।

(ख) पारिस्थितिकी पर्यटन महायोजना राज्य सरकार के पर्यावरण और वन विभाग के परामर्श से पर्यटन विभाग द्वारा बनायी जाएगी।

(ग) पर्यटन महायोजना आंचलिक महायोजना का घटक होगी।

(घ) पर्यटन महायोजना पारिस्थितिकी संवेदी जोन की वहन क्षमता के आधार पर तैयार की जायेगी।

(ङ) पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी क्रियाकलाप निम्नानुसार विनियमित किए जाएंगे, अर्थात्:-

(i) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें से जो भी अधिक निकट हो, किसी होटल या रिजॉर्ट का नया सन्निर्माण अनुमत्य नहीं किया जाएगा:

परंतु यह, पारिस्थितिकी पर्यटन सुविधाओं के लिए संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर की दूरी से परे पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक पूर्व परिभाषित और अभीहित क्षेत्रों में पर्यटन महायोजना के अनुसार, नए होटलों और रिजॉर्ट की स्थापना अनुमत्य होगी;

(ii) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अन्दर सभी नए पर्यटन क्रिया-कलापों या विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों का विस्तार, केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा जारी दिशानिर्देशों तथा पारिस्थितिकी पर्यटन, पारिस्थितिकी-शिक्षा और पारिस्थितिकी-विकास पर बल देने वाले राष्ट्रीय व्याघ्र संरक्षण प्राधिकरण द्वारा जारी पारिस्थितिकी पर्यटन संबंधी दिशानिर्देशों (समय-समय पर यथा संशोधित) के अनुसार होगा;

(iii) आंचलिक महायोजना का अनुमोदन होने तक, पर्यटन के विकास और विद्यमान पर्यटन क्रियाकलापों के विस्तार को वास्तविक स्थल-विशिष्ट संवीक्षा तथा मानीटरी समिति की सिफारिश के आधार पर संबंधित विनियामक प्राधिकरणों द्वारा अनुमत्य किया जाएगा और पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए होटल/ रिजॉर्ट या वाणिज्यिक प्रतिष्ठान का सन्निर्माण अनुमत्य नहीं होगा।

(4) **प्राकृतिक विरासत.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले बहुमूल्य प्राकृतिक विरासत के सभी स्थलों जैसे कि जीन पूल रिजर्व क्षेत्र, शैल संरचना, जल प्रपात, झरने, दर्रे, उपवन, गुफाएं, स्थल, वनपथ, रोहण मार्ग, उत्प्रपात आदि की पहचान की जाएगी और उनकी सुरक्षा एवं संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(5) **मानव निर्मित विरासत स्थल.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भवनों, संरचनाओं, कलाकृति-क्षेत्रों तथा ऐतिहासिक, स्थापत्य संबंधी, सौंदर्यात्मक और सांस्कृतिक महत्व के क्षेत्रों की पहचान की जाएगी और उनके संरक्षण के लिए आंचलिक महायोजना के भाग के रूप में एक विरासत संरक्षण योजना बनायी जाएगी।

(6) **ध्वनि प्रदूषण.-** पर्यावरण अधिनियम के अधीन ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियम, 2000 में नियत उपबंधों के अनुसार पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ध्वनि प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण किया जाएगा।

(7) **वायु प्रदूषण.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में, वायु प्रदूषण का निवारण और नियंत्रण, वायु (प्रदूषण निवारण और नियंत्रण) अधिनियम, 1981 (1981 का 14) और उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(8) **बहिस्त्राव का निस्सरण.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में उपचारित बहिस्त्राव का निस्सरण, पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बनाए गए नियमों के अधीन आने वाले पर्यावरणीय प्रदूषण के निस्सरण के लिए साधारण मानकों या राज्य सरकार द्वारा नियत मानकों, जो भी अधिक कठोर हो, के उपबंधों के अनुसार होगा।

(9) **ठोस अपशिष्ट.-** ठोस अपशिष्ट का निपटान एवं प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ठोस अपशिष्ट का निपटान और प्रबंधन भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं. का.आ. 1357(अ), दिनांक 8 अप्रैल, 2016 के तहत प्रकाशित ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा; अकार्बनिक पदार्थों का निपटान पारिस्थितिकी संवेदी जोन से बाहर चिन्हित किए गए स्थानों पर पर्यावरण-अनुकूल रीति से किया जाएगा;

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन (ईएसएम) अनुमत्य किया जायेगा।

(10) **जैव चिकित्सा अपशिष्ट.-** जैव चिकित्सा अपशिष्ट का प्रबंधन निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में जैव चिकित्सा अपशिष्ट का निपटान भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 343 (अ), तारीख 28 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित जैव चिकित्सा अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(ख) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में मान्य प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए विद्यमान नियमों और विनियमों के अनुरूप ठोस अपशिष्ट का सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल प्रबंधन अनुमत्य किया जायेगा।

(11) **प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्लास्टिक अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 340(अ), तारीख 18 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(12) **निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में निर्माण और विध्वंस अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की समय-समय पर यथा संशोधित अधिसूचना सं.सा.का.नि 317(अ), तारीख 29 मार्च, 2016 के तहत प्रकाशित संनिर्माण और विध्वंस अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(13) **ई-अपशिष्ट.-** पारिस्थितिकी संवेदी जोन में ई-अपशिष्ट का प्रबंधन, भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा प्रकाशित तथा समय-समय पर यथा संशोधित ई-अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2016 के उपबंधों के अनुसार किया जाएगा।

(14) **सड़क-यातायात.-** सड़क-यातायात को पर्यावास-अनुकूल तरीके से विनियमित किया जाएगा और इस संबंध में आंचलिक महायोजना में विशेष उपबंध शामिल किए जाएंगे। आंचलिक महायोजना के तैयार होने और राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी से अनुमोदित होने तक, मानीटरी समिति प्रासंगिक अधिनियमों और उनके तहत बनाए गए नियमों एवं विनियमों के अनुसार सड़क-यातायात के अनुपालन की मानीटरी करेगी।

(15) **वाहन जनित प्रदूषण.-** वाहन जनित प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण लागू विधियों के अनुसार किया जाएगा। स्वच्छतर ईंधन के उपयोग के लिए प्रयास किए जाएंगे।

(16) **औद्योगिक ईकाइयां.-** (i) सरकारी राजपत्र में इस अधिसूचना के प्रकाशन की तारीख को या उसके बाद पारिस्थितिकी संवेदी जोन में किसी नए प्रदूषणकारी उद्योग की स्थापना अनुमत्य नहीं होगी।

(ii) जब तक इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा फरवरी, 2016 में जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना अनुमत्य होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जाएगा।

(17) **पहाड़ी ढलानों का संरक्षण.-** पहाड़ी ढलानों का संरक्षण निम्नानुसार किया जाएगा:-

(क) आंचलिक महायोजना में पहाड़ी ढलानों के उन क्षेत्रों को दर्शाया जाएगा जिनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी;

(ख) जिन ढलानों या विद्यमान खड़ी पहाड़ी ढलानों में अत्यधिक भू-क्षरण होता है उनमें किसी भी संनिर्माण की अनुज्ञा नहीं होगी।

4. पारिस्थितिकी संवेदी जोन में प्रतिषिद्ध या विनियमित किए जाने वाले क्रियाकलापों की सूची- पारिस्थितिकी संवेदी जोन में सभी क्रियाकलाप, पर्यावरण अधिनियम और उसके अधीन बने नियमों के उपबंधों जिसमें तटीय विनियमन जोन, 2011 एवं पर्यावरणीय प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 शामिल है, सहित वन (संरक्षण) अधिनियम, 1980 (1980 का 69), भारतीय वन अधिनियम, 1927 (1927 का 16), वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (1972 का 53) अन्य लागू नियमों तथा उनमें किए गए संशोधनों के अनुसार शासित होंगे और नीचे दी गई सारणी में विनिर्दिष्ट रीति से विनियमित होंगे, अर्थात्:-

सारणी

क्रम सं. (1)	क्रियाकलाप (2)	टिप्पणी (3)
क. प्रतिषिद्ध क्रियाकलाप		
1.	वाणिज्यिक खनन, पत्थर उत्खनन और अपघर्षण इकाइयां।	<p>(क) पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत वास्तविक स्थानीय निवासियों की घरेलू आवश्यकताओं जिसमें मकानों के संनिर्माण या मरम्मत के लिए धरती को खोदना सम्मिलित है, के सिवाय सभी प्रकार के नए और विद्यमान खनन (लघु और वृहत खनिज), पत्थर उत्खनन और अपघर्षण इकाइयां तत्काल प्रभाव से प्रतिषिद्ध होंगी;</p> <p>(ख) खनन प्रचालन, 1995 की रिट याचिका (सिविल) सं. 202 में टी.एन. गौडावर्मन थिरुमुलपद बनाम भारत संघ के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय के आदेश दिनांक 4 अगस्त, 2006 और 2012 की रिट याचिका (सिविल) सं. 435 में गोवा फाउंडेशन बनाम भारत संघ के मामले में दिनांक 21 अप्रैल, 2014 के आदेश के अनुसरण में होगा।</p>

2.	प्रदूषण (जल, वायु, मृदा, ध्वनि, आदि) उत्पन्न करने वाले उद्योगों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन में कोई नया उद्योग लगाने और वर्तमान प्रदूषणकारी उद्योगों का विस्तार करने की अनुमति नहीं होगी: जब तक कि इस अधिसूचना में विनिर्दिष्ट न हो, पारिस्थितिकी संवेदी जोन में फरवरी, 2016, में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी दिशानिर्देशों में किए गए उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार केवल गैर-प्रदूषणकारी उद्योगों की स्थापना होगी। इसके अतिरिक्त, गैर-प्रदूषणकारी कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहन दिया जाएगा।
3.	बड़ी जल विद्युत परियोजनाओं की स्थापना।	प्रतिषिद्ध।
4.	किसी परिसंकटमय पदार्थ का प्रयोग या उत्पादन या प्रसंस्करण।	प्रतिषिद्ध।
5.	प्राकृतिक जल निकायों या भूमि क्षेत्र में अनुपचारित बहिस्त्रावों का निस्सरण।	प्रतिषिद्ध।
6.	नई आरा मिलों की स्थापना।	पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भीतर नई और विद्यमान आरा मिलों का विस्तार अनुमत्य नहीं होगा।
7.	ईट भट्टों की स्थापना करना।	प्रतिषिद्ध।
ख. विनियमित क्रियाकलाप		
8.	होटलों और रिसोर्टों की वाणिज्यिक स्थापना।	पारिस्थितिकी पर्यटन क्रियाकलापों हेतु लघु अस्थायी संरचनाओं के निर्माण के सिवाय, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें से जो भी अधिक निकट हो, नए वाणिज्यिक होटलों और रिसोर्टों की स्थापना अनुमत्य नहीं होगी: परंतु, संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर बाहर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा तक, इनमें जो भी अधिक निकट हो, पर्यटन महायोजना और लागू दिशानिर्देशों के अनुसार सभी नए पर्यटन क्रियाकलाप करने या विद्यमान क्रियाकलापों का विस्तार करने की अनुज्ञा होगी।
9.	संनिर्माण क्रियाकलाप।	(क) संरक्षित क्षेत्र की सीमा से एक किलोमीटर के भीतर या पारिस्थितिकी संवेदी जोन के विस्तार तक जो भी निकट हो, किसी भी प्रकार का वाणिज्यिक संनिर्माण अनुमत्य नहीं किया जाएगा: परंतु स्थानीय लोगों को पैराग्राफ 3 के उप पैराग्राफ (1) में सूचीबद्ध क्रियाकलापों सहित उनके उपयोग के लिए उनकी भूमि में स्थानीय निवासियों की आवासीय आवश्यकताओं को पूरा करने लिए संनिर्माण करने की अनुमति भवन उपविधियों के अनुसार दी जाएगी। परन्तु ऐसे लघु उद्योग जो प्रदूषण उत्पन्न नहीं करते हैं, से संबंधित संनिर्माण क्रियाकलाप विनियमित किए जाएंगे और लागू नियमों और विनियमों, यदि कोई हों, के अनुसार सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति से ही न्यूनतम पर रखे जाएंगे। (ख) एक किलोमीटर से आगे आंचलिक महायोजना के अनुसार विनियमित होंगे।
10.	गैर प्रदूषणकारी लघु उद्योग।	फरवरी, 2016 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा जारी उद्योगों के वर्गीकरण के अनुसार गैर-प्रदूषणकारी उद्योग तथा अपरिसंकटमय लघु और सेवा उद्योग, कृषि, पुष्प कृषि, वागवानी या कृषि आधारित उद्योग, जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन से देशी सामग्रियों से उत्पाद बनाते हैं, सक्षम प्राधिकारी द्वारा अनुमत्य होंगे।

11.	वृक्षों की कटाई।	(क) राज्य सरकार के सक्षम प्राधिकारी की पूर्व अनुमति के बिना वन भूमि या सरकारी या राजस्व या निजी भूमि पर वृक्षों की कटाई नहीं होगी। (ख) वृक्षों की कटाई केंद्रीय या संबंधित राज्य के अधिनियम या उसके अधीन बनाए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार विनियमित होगी।
12.	वन उत्पादों और गैर काष्ठ वन उत्पादों का संग्रहण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
13.	विद्युत और संचार टॉवर लगाने, तार-बिछाने तथा अन्य बुनियादी ढांचे की व्यवस्था।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा (भूमिगत केवल विद्युत के बड़ावा दिया जाएगा)।
14.	नागरिक सुविधाओं सहित बुनियादी ढांचा।	लागू विधियों नियमों और विनियमनों और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
15.	विद्यमान सड़कों को चौड़ा करना, उन्हें सुदृढ़ बनाना और नई सड़कों का निर्माण।	लागू विधियों नियमों और विनियमनों और उपलब्ध दिशानिर्देशों के अनुसार न्यूनीकरण उपाय किए जाएंगे।
16.	पर्यटन से संबंधित अन्य क्रियाकलाप जैसे कि पारिस्थितिकी संवेदी जोन क्षेत्र के ऊपर से गर्म वायु के गुब्बारे, हेलीकाप्टर, ड्रोन, माइक्रोलाइट्स उड़ाना आदि।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
17.	पहाड़ी ढलानों और नदी तटों का संरक्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
18.	रात्रि में वाहन यातायात का संचलन।	लागू विधियों के अधीन वाणिज्यिक प्रयोजन के लिए विनियमित होगा।
19.	स्थानीय जनता द्वारा अपनायी जा रही वर्तमान कृषि और बागवानी पद्धतियों के साथ डेयरियां, दुग्ध उत्पादन, जल कृषि और मत्स्य पालन।	स्थानीय जनता के प्रयोग के लिए लागू विधियों के अधीन अनुमत्य होंगे।
20.	फर्मों, कारपोरेट, कंपनियों द्वारा बड़े पैमाने पर वाणिज्यिक पशुधन संपदा और कुक्कुट फार्मों की स्थापना।	स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लागू विधियों के अधीन विनियमित (अन्यथा प्रदान किए गए) होंगे।
21.	प्राकृतिक जल निकायों या भू क्षेत्र में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सरण।	जल निकायों में उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह के निस्सरण से बचा जाएगा। उपचारित अपशिष्ट जल के पुनर्चक्रण और पुनः उपयोग के प्रयास किए जाएंगे अन्यथा उपचारित अपशिष्ट जल/बहिर्वाह का निस्सरण लागू विधियों के अनुसार विनियमित किया जाएगा।
22.	ठोस अपशिष्ट निपटान स्थल और ठोस और जैव चिकित्सा अपशिष्ट के लिए सामान्य जलाए जाने की सुविधा की स्थापना।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
23.	सतही और भूजल का वाणिज्यिक प्रयोग एवं निष्कर्षण।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
24.	ठोस अपशिष्ट का प्रबंधन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
25.	विदेशी प्रजातियों को लाना।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
26.	पारिस्थितिकी पर्यटन।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
27.	पोलिथीन बैगों का प्रयोग।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
28.	वाणिज्यिक संकेत बोर्ड और होर्डिंग	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।

	का प्रयोग।	
29.	कृषि और अन्य उपयोग के लिए खुले कुआ, बोर कुआ, आदि।	लागू विधियों के अधीन विनियमित होगा।
ग.संवर्धित क्रियाकलाप		
30.	वर्षा जल संचय।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
31.	जैविक खेती।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
32.	सभी गतिविधियों के लिए हरित प्रौद्योगिकी का अंगीकरण।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
33.	ग्रामीण कारीगरी सहित कुटीर उद्योग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
34.	नवीकरणीय ऊर्जा और ईंधन का प्रयोग।	वायोगैस, सौर प्रकाश इत्यादि को सक्रिय बढ़ावा दिया जाएगा।
35.	कृषि वानिकी।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
36.	बागान लगाना और जड़ी बूटियों का रोपण।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
37.	पारिस्थितिकी अनुकूल यातायात का प्रयोग।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
38.	कौशल विकास।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
39.	अवक्रमित भूमि/वनों/ पर्यावासों की बहाली।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।
40.	पर्यावरण के प्रति जागरूकता।	सक्रिय रूप से बढ़ावा दिया जाएगा।

5. पारिस्थितिकी-संवेदी जोन अधिसूचना की निगरानी के लिए निगरानी समिति.- पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 3 की उपधारा (3) के तहत इस अधिसूचना के उपबंधों की प्रभावी निगरानी के लिए केन्द्रीय सरकार एतद्वारा एक निगरानी समिति का गठन करेगी जो निम्नलिखित से मिलकर बनेगी, नामतः:

क्र.स.	निगरानी समिति का गठन	पद
(i)	जिला कलेक्टर, पालाक्कड	पदेन, अध्यक्ष;
(ii)	जिला कलेक्टर, मालाप्पुरम	सदस्य;
(iii)	विधान सभा के सदस्य (एमएलए), मन्नारक्कड	सदस्य;
(iv)	विधान सभा का सदस्य (एमएलए), वांडूर	सदस्य;
(v)	जिला पंचायत अध्यक्ष, पालाक्कड और मालाप्पुरम	सदस्य;
(vi)	पर्यावरण विभाग, केरल सरकार का प्रतिनिधित्व	सदस्य;
(vii)	केरल सरकार द्वारा नामित प्राकृतिक संरक्षण (विरासत संरक्षण सहित) के क्षेत्र में काम करने वाले गैर-सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि	सदस्य;
(viii)	जिला अधिकारी, केरल राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, पालाक्कड और मालाप्पुरम	सदस्य;
(ix)	सदस्य राज्य जैव विविधता बोर्ड	सदस्य;
(x)	वन्यजीव बार्डन, साइलेंट वैली विभाग	सदस्य- सचिव

6.विचारार्थ विषय:- (1) निगरानी समिति इस अधिसूचना के उपबंधों के अनुपालन की निगरानी करेगी।

(2) निगरानी समिति का कार्यकाल तीन वर्ष तक या राज्य सरकार द्वारा नई समिति का पुनर्गठन किए जाने तक होगा और इसके बाद निगरानी समिति राज्य सरकार द्वारा गठित की जाएगी।

- (3) पारिस्थितिकी संवेदी जोन में भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना सं. का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अनुसूची में सम्मिलित और पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आने वाले क्रियाकलापों और इस अधिसूचना के पैराग्राफ 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध गतिविधियों के सिवाय आने वाले ऐसे क्रियाकलापों की वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उक्त अधिसूचना के उपबंधों के अधीन पूर्व पर्यावरण अनापत्ति लेने के लिए केन्द्रीय सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को निर्दिष्ट की जाएगी।
 - (4) इस अधिसूचना के पैरा 4 के अधीन सारणी में यथा विनिर्दिष्ट प्रतिषिद्ध क्रियाकलापों के सिवाय, भारत सरकार के तत्कालीन पर्यावरण और वन मंत्रालय की अधिसूचना संख्या का.आ. 1533(अ), तारीख 14 सितंबर, 2006 की अधिसूचना के अनुसूची के अधीन ऐसे क्रियाकलापों, जिन्हें सम्मिलित नहीं किया गया है, परंतु जो पारिस्थितिकी संवेदी जोन में आते हैं, ऐसे क्रियाकलापों की वास्तविक विनिर्दिष्ट स्थलीय दशाओं के आधार पर निगरानी समिति द्वारा संवीक्षा की जाएगी और उसे संबद्ध विनियामक प्राधिकरणों को निर्दिष्ट किया जाएगा।
 - (5) निगरानी समिति का सदस्य-सचिव या संबद्ध उपायुक्त या संबंधित उपायुक्त ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध, जो इस अधिसूचना के किसी उपबंध का उल्लंघन करता है, पर्यावरण अधिनियम की धारा 19 के अधीन परिवाद दायर करने के लिए सक्षम होगा।
 - (6) निगरानी समिति संबंधित विभागों के प्रतिनिधियों या विशेषज्ञों, औद्योगिक संघों के प्रतिनिधियों या संबंधित पक्षों को, प्रत्येक मामले में आवश्यकता के अनुसार, अपने विचार-विमर्श में सहायता के लिए आमंत्रित कर सकेगी।
 - (7) निगरानी समिति प्रत्येक वर्ष 31 मार्च की स्थिति के अनुसार अपनी वार्षिक कार्रवाई रिपोर्ट राज्य के मुख्य वन्यजीव वार्डन को, उपाबंध V में दिए गए प्रपत्र के अनुसार, उस वर्ष की 30 जून तक प्रस्तुत करेगी।
 - (8) केन्द्रीय सरकार का पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय निगरानी समिति को उसके कृत्यों के प्रभावी निर्वहन के लिए ऐसे निदेश दे सकेगा जो वह उचित समझे।
7. इस अधिसूचना के उपबंधों को प्रभावी बनाने के लिए केन्द्रीय सरकार और राज्य सरकार, अतिरिक्त उपाय, यदि कोई हों, विनिर्दिष्ट कर सकेंगी।
8. इस अधिसूचना के उपबंध भारत के माननीय उच्चतम न्यायालय या उच्च न्यायालय या राष्ट्रीय हरित अधिकरण द्वारा पारित किए गए या पारित किए जाने वाले आदेश, यदि कोई हो, के अध्याधीन होंगे।

[फा. सं. 25/102/2015-ईएसजेड-आरई]

डॉ. सतीश चन्द्र गढ़कोटी

वैज्ञानिक 'जी'

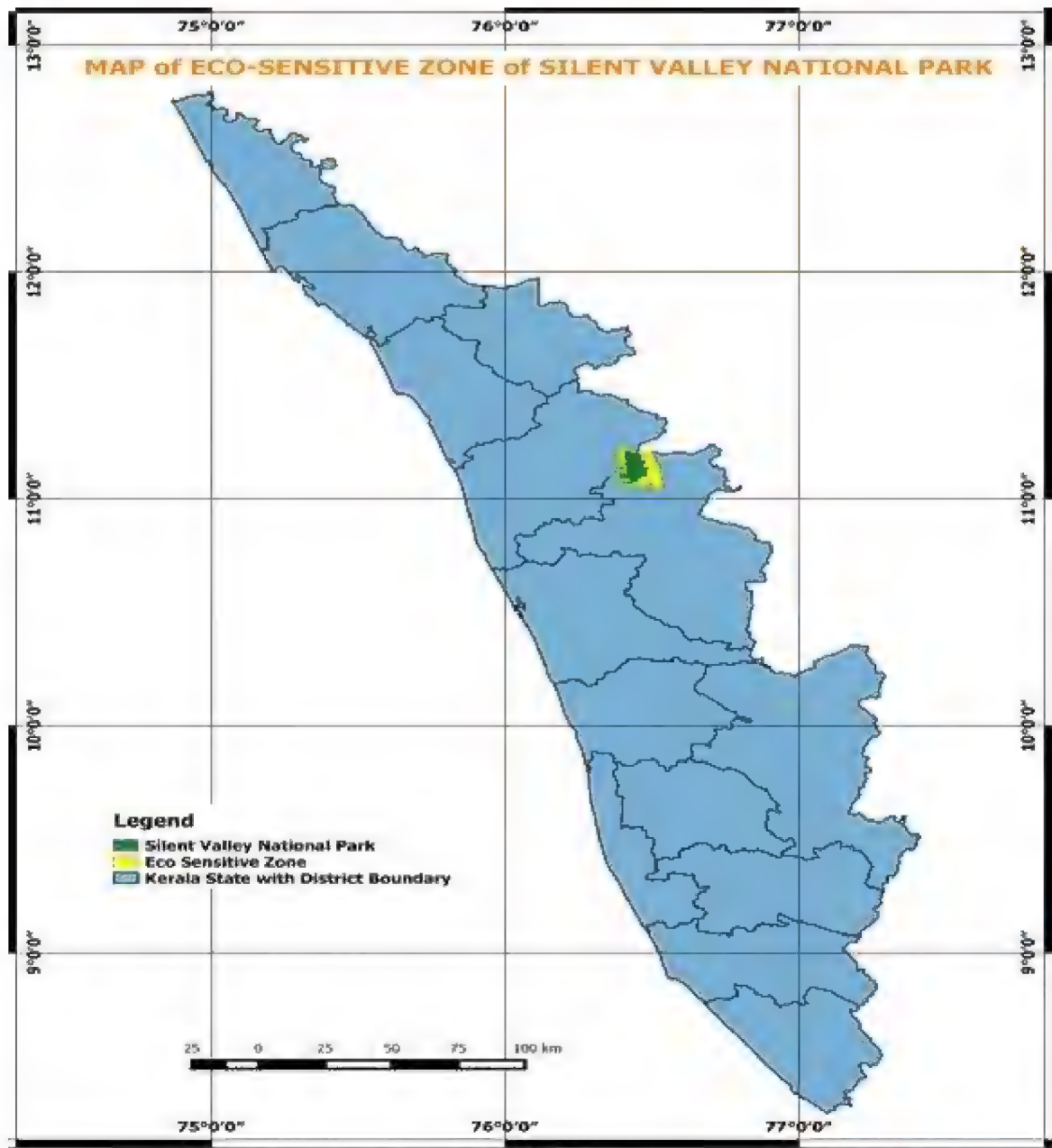
उपाबंध - I

केरल राज्य में साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिकी संवेदी जोन की सीमा का विवरण

उत्तर	पारिस्थितिकी संवेदी जोन अंतर-राज्यीय सीमा के साथ तमिलनाडु और केरल की राज्य सीमाओं के कोट्टापुझा मिलन बिंदु से होते हुए जाती है। यह अंगिदा चोटी तक जाती है जो शून्य चौड़ाई वाला पारिस्थितिकी संवेदी जोन है और वहां से पारिस्थितिकी संवेदी जोन राज्य सीमा के साथ पूर्व की ओर बढ़ती है और पारिस्थितिकी संवेदी जोन सीमा दक्षिण में मेलेथुदुक्की (4.57 किलोमीटर से 5.3 किलोमीटर तक चौड़ाई श्रेणी) की ओर मुड़ती है।
उत्तर – पूर्व	मेलेथुदुक्की से आरंभ होकर यह कुदकुमाना दक्षिण (4.3-6.3 किलोमीटर चौड़ाई) से पहले भावानी नदी के रास्ते पर मिलती है।
पूर्व	कुदकुमाना दक्षिण से और भावानी नदी के साथ बढ़ती है जो दक्षिण की ओर चिन्दक्की से होते हुए जाती है। थडीक्कुंड से लगभग एक किलोमीटर (4.5-6.3 किलोमीटर चौड़ाई) बहने के बाद वाले स्थल के आसपास इसकी पूर्वी सीमा समाप्त होती है।
दक्षिण-पूर्व	दक्षिण-पूर्व सीमा भावानी नदी के साथ मंदनपोट्टीथोडु से आगे तक जाती है। मंदनपोट्टीथोडु से पश्चिम की ओर अट्टापदी वन श्रेणी की दक्षिणी सीमा से मन्नरक्कुड श्रेणी के थाथेंगलम वेस्टिड वन (वीएफसी-1) की उत्तर-पूर्वी सीमा तक और थाथेंगलम की ऊँचाइयों (चौड़ाई 3.2-9.8 किलोमीटर) में समाप्त होता है।
दक्षिण	दक्षिणी सीमा थाथेंगलम ऊँचाई से वनमपारा की ओर मुड़ती है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन की न्यूनतम चौड़ाई यहां 0.5 किलोमीटर है जबकि अधिकतम 2.6 किलोमीटर है।
दक्षिण-पश्चिम	वनमपारा से सीमा पालाक्कुड-मालापपुरम जिला सीमा की ओर मुड़ती है और कन्नामपल्ली (1.75 – 5 किलोमीटर चौड़ाई) से होते हुए जाती है।
पश्चिम	पारिस्थितिकी संवेदी जोन का पश्चिमी भाग कन्नामपल्ली से अट्टी तक विस्तृत है। पारिस्थितिकी संवेदी जोन की न्यूनतम चौड़ाई यहां 1 किलोमीटर है जबकि अधिकतम चौड़ाई 3.1 किलोमीटर है।
उत्तर-पश्चिम	पारिस्थितिकी संवेदी जोन सीमा कोट्टापुझा की ओर अट्टी से आरंभ होती है और अंतर-राज्यीय सीमा मिलती है। श्रेणी की चौड़ाई 1.3 किलोमीटर से 3.3 किलोमीटर तक है।

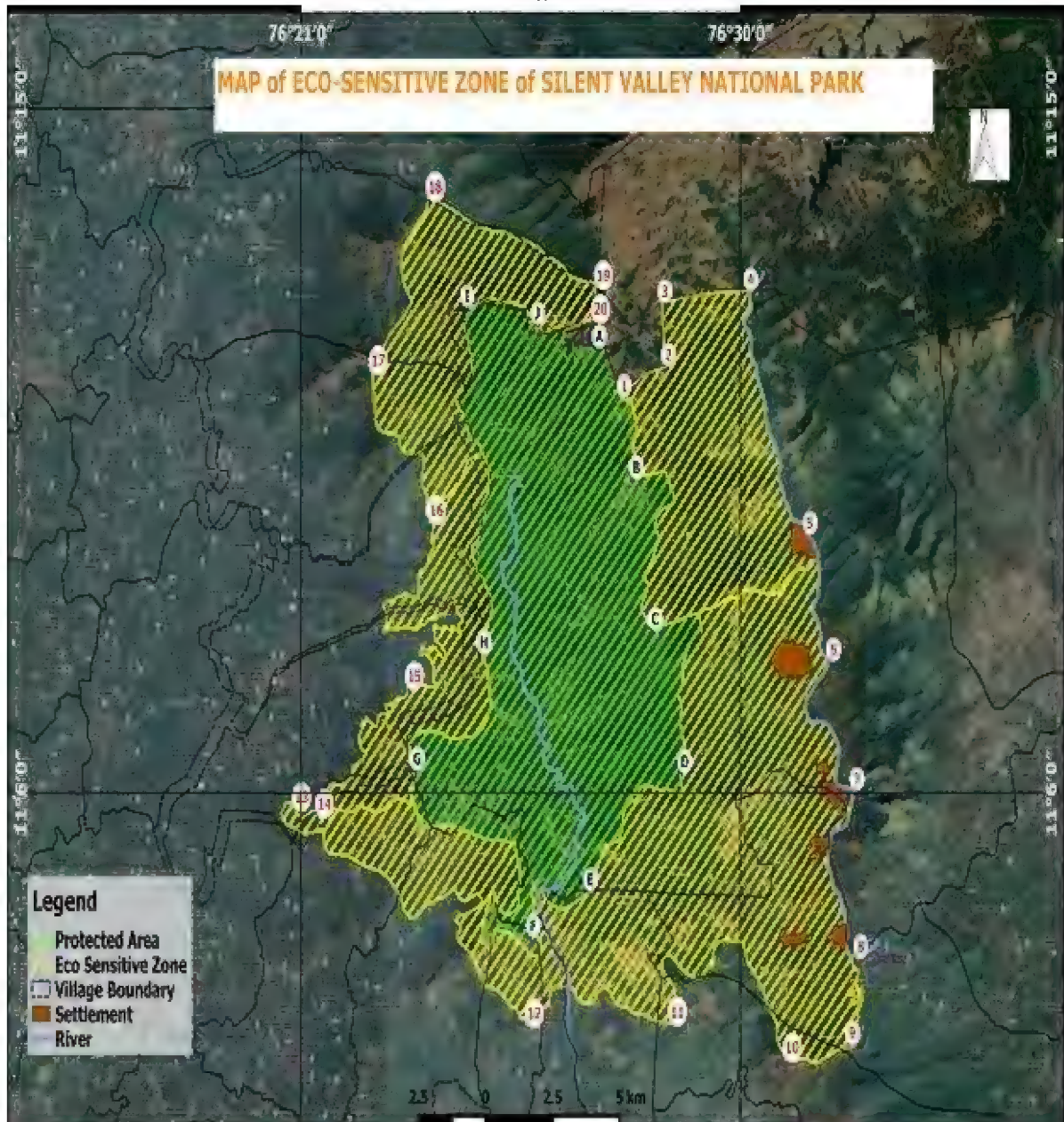
उपाबंध – IIक

केरल राज्य में साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का अवस्थान मानचित्र



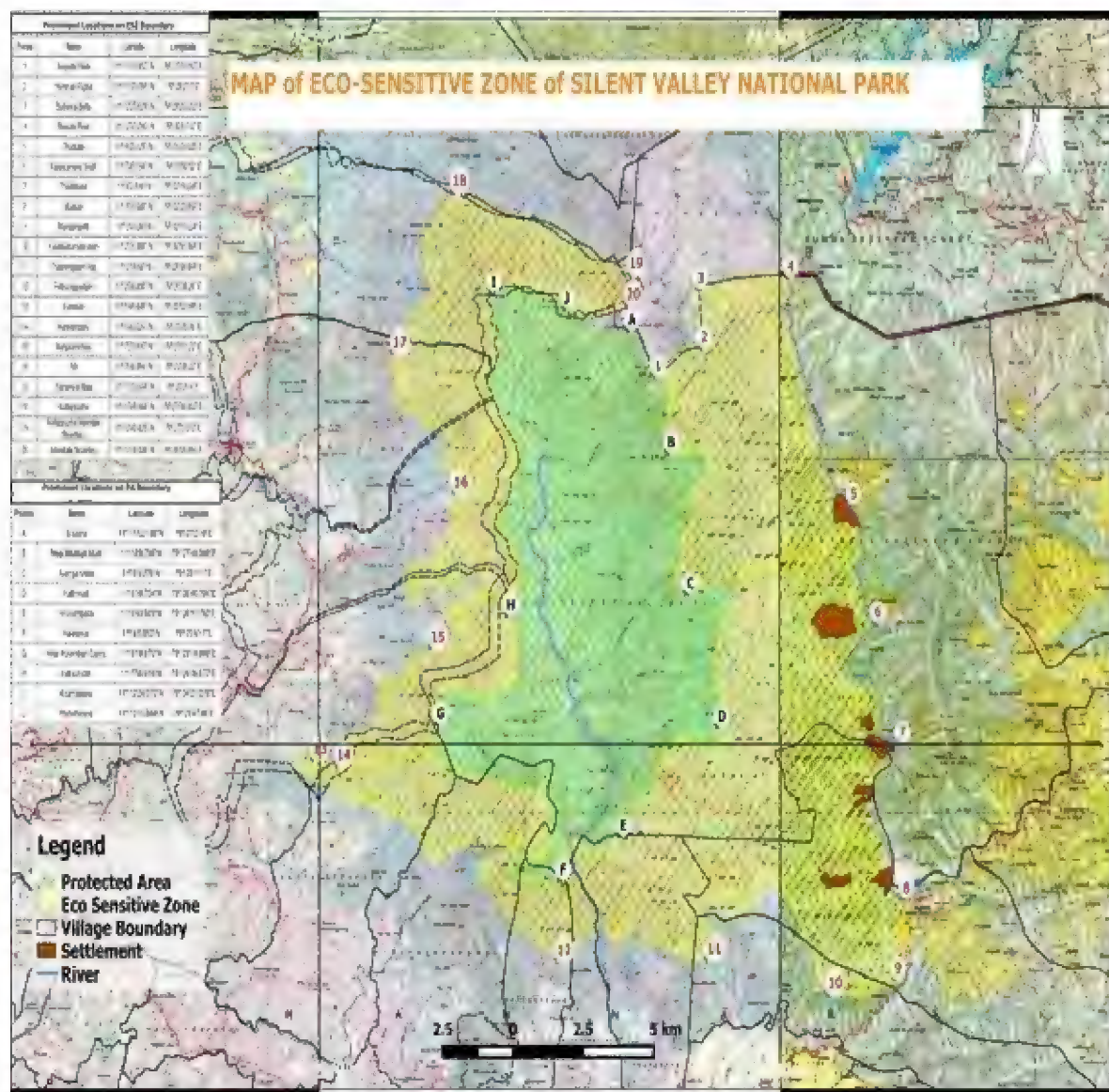
उपाबंध - IIख

मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिकी संवेदी
जोन का गूगल चित्र



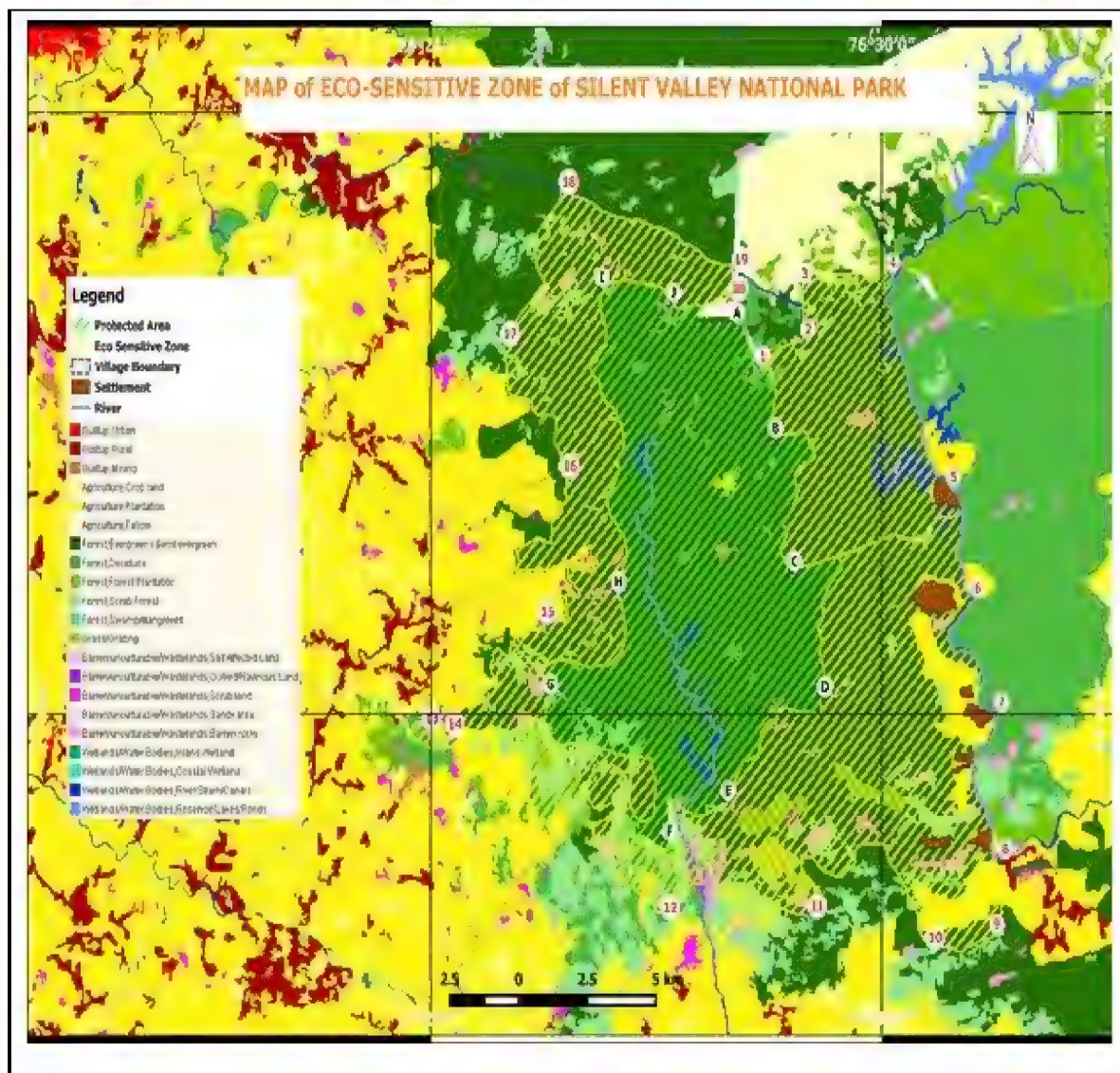
उपाबंध - IIग

मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिकी संवेदी जोन के भूमि उपयोग पैटर्न को दर्शाने वाला मानचित्र



उपाबंध – IIघ

मुख्य अवस्थानों के अक्षांश और देशांतर के साथ साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिकी संवेदी जोन का भूमि उपयोग मानचित्र



उपाबंध -III

सारणी क : साइलेंट वैली राष्ट्रीय उद्यान के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

मुख्य अवस्थानों की पहचान	नाम	अक्षांश	देशांतर
ए	सिस्पारा	11°11'52.188"उ	76°27'2.16"पू
बी	मुक्कली मुडी नदी	11°10'8.796"उ	76°27'48.096"पू
सी	अलंगा माला	11°8'9.276"उ	76°28'11.1"पू
डी	कट्टीमुडी	11°6'16.704"उ	76°28'46.704"पू
ई	अरुवाम्पारा	11°4'43.608"उ	76°26'51.792"पू
एफ	नैलिक्कल	11°4'6.852"उ	76°25'41.7"पू

जी	कूम्बान कैम्प नदी	11°6'18.972"उ	76°23'18.096"पू
एच	कटीसुंदान	11°7'50.916"उ	76°24'39.672"पू
आई	कोझीप्पारा	11°12'24.372"उ	76°24'21.276"पू
जे	पिचल्लीपारा	11°12'10.584"उ	76°25'47.46"पू

सारणी ख: पारिस्थितिकी संवेदी जोन के मुख्य अवस्थानों के भू-निर्देशांक

मुख्य अवस्थानों की पहचान	नाम	अक्षांश	देशांतर
1	अंगींदा चोटी	11°11'13.452" उ	76°27'33.192" पू
2	येम्मारी पूजहा	11°11'37.788" उ	76°28'27.3" पू
3	बुथीनराई बेत्ता	11°12'27.828" उ	76°28'23.232" पू
4	भावानी नदी	11°12'37.296" उ	76°30'8.712" पू
5	थुदुक्की	11°9'25.128" उ	76°31'21.828" पू
6	कदकुमाना दक्षिण	11°7'45.156" उ	76°31'50.52" पू
7	थदीक्कुंद	11°6'2.916" उ	76°32'19.248" पू
8	मुक्काली	11°3'51.048" उ	76°32'23.856" पू
9	मन्दाम्पोट्टी	11°2'43.26" उ	76°32'13.524" पू
10	वाराक्कल्लुमालावरम	11°2'31.488" उ	76°30'55.368" पू
11	थाथेनगलम टॉप	11°2'59.64" उ	76°28'34.068" पू
12	पोथुवाप्पादम	11°2'58.488" उ	76°25'38.28" पू
13	कुंदूदा	11°5'48.408" उ	76°20'52.188" पू
14	कन्नमपल्ली	11°5'43.224" उ	76°21'20.34" पू
15	मनजालाम्बोला	11°7'23.916" उ	76°23'11.22" पू
16	अट्टी	11°9'34.884" उ	76°23'38.22" पू
17	टैनाम्डी माला	11°11'33.504" उ	76°22'26.4" पू
18	कोट्टाप्पुझा	11°13'49.944" उ	76°23'36.492" पू
19	कोट्टाप्पुझा - अंतर-राज्यीय सीमा	11°12'40.428" उ	76°27'3.312" पू
20	अंतर-राज्यीय सीमा	11°12'14.004" उ	76°26'59.856" पू

उपाबंध -IV

भू-निर्देशांकों के साथ साइलेंट बैली राष्ट्रीय उद्यान के पारिस्थितिकी संवेदी जोन के अंतर्गत आने वाले ग्रामों की सूची

क्र.सं.	ग्राम	तालुक	जिला	भू-निर्देशांक		स्थिति (आंशिक/पूर्ण)
1	कल्लामाला	मन्नारक्कड	पालाक्कड	11° 3'36.88"उ	76°32'25.70"पू	आंशिक
2	पदावायाल	मन्नारक्कड	पालाक्कड	11° 9'4.81"उ	76°31'30.30"पू	आंशिक
3	पालकायाम	मन्नारक्कड	पालाक्कड	11° 3'31.33"उ	76°29'8.50"पू	आंशिक
4	पाय्यानादाम	मन्नारक्कड	पालाक्कड	11° 3'12.81"उ	76°26'5.20"पू	आंशिक
5	मन्नारक्कड	मन्नारक्कड	पालाक्कड	11° 3'15.23"उ	76°27'25.09"पू	आंशिक
6	अल्लानाल्लूर III	मन्नारक्कड	पालाक्कड	11° 5'1.18"उ	76°22'15.63"पू	आंशिक
7	कोट्टोपादम I	मन्नारक्कड	पालाक्कड	11° 3'33.84"उ	76°24'40.98"पू	आंशिक
8	कोट्टोपादम III	मन्नारक्कड	पालाक्कड	11° 3'11.92"उ	76°25'17.18"पू	आंशिक

9	करुवाराकुंदु	नीलम्बूर	मालाप्पुरम	11° 6'59.38"उ	76°22'35.11"पू	आंशिक
10	केरला राज्य	नीलम्बूर	मालाप्पुरम	11° 8'42.15"उ	76°23'24.42"पू	आंशिक
11	चोक्कड	नीलम्बूर	मालाप्पुरम	11°13'3.54"उ	76°23'3.58"पू	आंशिक
12	कालीकावु	नीलम्बूर	मालाप्पुरम	11°11'2.57"उ	76°22'30.28"पू	आंशिक

उपाबंध-V**की गई कार्रवाई सम्बन्धी रिपोर्ट का प्रपत्र:**

1. बैठकों की संख्या और तारीख ।
2. बैठकों का कार्यवृत्त : (कृपया मुख्य उल्लेखनीय बिंदुओं का वर्णन करें । बैठक के कार्यवृत्त को एक पृथक अनुलग्नक में प्रस्तुत करें) ।
3. पर्यटन महायोजना सहित आंचलिक महायोजना की तैयारी की स्थिति ।
4. भू-अभिलेखों की स्पष्ट त्रुटियों के सुधार के लिए निबटाए गए मामलों का सार (पारिस्थितिकी-संवेदी जोन वार) । विवरण अनुलग्नक के रूप में संलग्न करें।
5. पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 के अधीन आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार। (विवरण एक पृथक अनुलग्नक के रूप में संलग्न करें)।
6. पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 के अधीन न आने वाली गतिविधियों से संबंधित संवीक्षा किए गए मामलों का सार । (विवरण एक पृथक अनुलग्नक के रूप में संलग्न करें)।
7. पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 की धारा 19 के अधीन दर्ज की गई शिकायतों का सार ।
8. कोई अन्य महत्वपूर्ण मामला ।

MINISTRY OF ENVIRONMENT, FOREST AND CLIMATE CHANGE**NOTIFICATION**New Delhi, the 27th October, 2020

S.O. 3880(E).—In supersession of Ministry's draft notification S.O. 118 (E), dated 6th January, 2016, the following draft of the notification, which the Central Government proposes to issue in exercise of the powers conferred by sub-section (1), read with clause (v) and clause (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986) is hereby published, as required under sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, for the information of the public likely to be affected thereby; and notice is hereby given that the said draft notification shall be taken into consideration on or after the expiry of a period of sixty days from the date on which copies of the Gazette containing this notification are made available to the public;

Any person interested in making any objections or suggestions on the proposals contained in the draft notification may forward the same in writing, for consideration of the Central Government within the period so specified to the Secretary, Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Indira Paryavaran Bhawan, Jorbagh Road, Aliganj, New Delhi-110 003, or send it to the e-mail address of the Ministry at esz-mef@nic.in

Draft Notification

WHEREAS, the Silent Valley National Park is situated in Palakkad (Mannarkkad Taluk) and Malappuram (Nilambur Taluk) Districts of Kerala State lies between the North latitude 11° 2' and 11°13' and

between the East longitude 76°24' and 76°32'. The National Park was previously notified as Reserved Forests in 1914 as per Notification No. 291 dated 18th May 1914 and published in St. George Gazette dated 19th June 1914. In the year 1984, after going through the due process of law, the State Government of Kerala vide its Notification No. 5462/FSA3/82/AD dated 15th November, 1984 and published in Gazette No. 1005, Vol. XXIX dated 23rd November, 1984 notified an extent of 89.52 square kilometres area as Silent Valley National Park under the provisions of the sub-section (4) of 35 of Wildlife Protection Act, 1972 (53 of 1972). In 2007, vide G.O. (MS) 36/07/F&WLD dated 07th February 2007, an area of 148 square kilometres was added to this division as Buffer Zone;

AND WHEREAS, the Silent Valley Plateau lying at the southwest corner of Nilgiris, sloping towards the south is practically ringed in by hills. There is no representation, comparable in area to the Silent Valley in the form of riparian and non- riparian ecosystems on undulating terrain at mid-elevation and in the high rainfall zone over the entire stretch of Western Ghats in Kerala. The terrain is generally undulating with steep escarpments and many hillocks. The elevation ranges from 900 meters to 2,300 meters above meter above sea level (asl) with the highest peak at 2,383 metres (Anginda peak). The core area of Silent Valley National Park is central and critical part of 5500 square kilometre of core area of Niligiri Biosphere Reserve and also forms an integral part of Nilambur Elephant Reserve constituted under Project elephant which have 1419 square kilometre and it is also a part of world heritage site;

AND WHEREAS, Silent Valley National Park has rich floral and faunal diversity and about 966 species of angiosperm species in 430 genera and 33 families of dicots including 108 species of orchids and 139 genera and 21 families of monocots, about 77 species of lichens and 77 species of pteridophytes have been reported from the Park. The recorded faunal diversity consists of 41 species of mammals, 211 species of birds including 15 Western Ghat endemics, 42 species of reptiles, 46 species of amphibians, 12 species of freshwater fish, 92 species of butterflies and 250 species of moths;

AND WHEREAS, the vulnerable, rare, endangered and threatened species available in the National Park are tiger (*Panthera tigris*), leopard (*Panthera pardus*), dhole (*Cuon alpinus*), lion tailed macaque (*Macaca silenus*), pangolin (*Manis crassicaudata*), Nilgiri marten (*Martes gwatkinsii*), Nilgiri langur (*Trachypithecus johnii*), forest cane turtle (*Vijayachelys sylvaticus*), wayanad bushfrog (*Pseudophilautus wynaadensis*), ponmudi bushfrog (*Raorchestes ponmudi*), red torrent toad (*Ghatophryne rubigina*), Malabar tree toad (*Paedostibes tuberculosus*), etc;

AND WHEREAS, the vulnerable, rare, endangered and threatened species of the National Park are *Toxocarpus palghatensis*, *Coscinium fenestratum*, *Cassine kedarnathii*, *Ipsa malabarica*, *Embelia gardneriana*, *Hedyotis hirsutissima*, *Nostolachma crassifolia*, *Murdannia lanceolata*, *Syzygium palghatense*, *Ficus beddomei*, *Ficus guttata*, *Helichrysum wightii*, *Ilex gardneriana*, *Isodon rivularis*, *Memecylon sisparensense*, *Myriactis wightii*, *Ophiorrhiza brunonis*, *Pavetta hohenackeri*, *Thunbergia bicolor*, *Asparagus fysonii*, *Bulbophyllum aureum*, *Cyclea fissicalyx*, *Derris benthamii*, *Hopea glabra*, *Hopea racophloea*, *Impatiens denisonii*, *Memecylon flavescens*, *Pogostemon gardneri*, *Pogostemon vestitus*, *Psychotria globicephal*, *Youngia nilgiriensis*, *Anaphalis beddomei*, *Anaphalis neelgerryana*, etc;

AND WHEREAS, the endemic species of the Silent Valley National Park are *Cassine kedarnathii*, *Ichthyophis longicephalus*, (Long-Headed Caecilian), *Duttaphrynus silentvallyensis*, (Silent Valley toad), *Micrixalus sairandhri* (Sairandhri dancing frog), *Micrixalus thampii* (Thampi's dancing frog), *Raorchestes lechiya* (Lechiyappan's Bushfrog), *Raorchestes silentvallyensis* (Silent Valley Bushfrog), etc;

AND WHEREAS, the Silent Valley National Park is the major watershed of Kunthipuzha which is the tributary of Bharathapuzha, a major source of water for drinking and irrigation purposes in the districts of Palakkad and Malappuram. The park also supports one of the few viable populations of the endangered Western Ghat endemic primate, the lion-tailed Macaque;

AND WHEREAS, in the biogeographically sense, the Silent Valley and the adjacent forests of Western Ghats represent "Ecological islands" and the isolation, therefore, has had the effect of preserving the relict character of the fauna and flora of Silent Valley and adjacent areas, as indicated by the presence of several primitive groups of flora and fauna;

AND WHEREAS, it is necessary to conserve and protect the area, the extent and boundaries of Silent Valley National Park which are specified in paragraph 1 as Eco-sensitive Zone from ecological, environmental and biodiversity point of view and to prohibit industries or class of industries and their operations and processes in the said Eco-sensitive Zone;

NOW, THEREFORE, in exercise of the powers conferred by sub-section (1) and clauses (v) and (xiv) of sub-section (2) and sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986 (29 of 1986)

(hereafter in this notification referred to as the Environment Act) read with sub-rule (3) of rule 5 of the Environment (Protection) Rules, 1986, the Central Government hereby notifies an area to an extent varying from zero to 9.8 kilometres around the boundary of Silent Valley National Park, in Palakkad and Malappuram Districts in the State of Kerala as the Eco-sensitive Zone (hereafter in this notification referred to as the Eco-sensitive Zone) details of which are as under, namely: -

1. **Extent and boundaries of Eco-sensitive Zone.** – (1) The Eco-sensitive Zone shall be to an extent of zero to 9.8 kilometres around the boundary of Silent Valley National Park and the area of the Eco-sensitive Zone is 148 square kilometres. *Zero extent was proposed towards the boundary of the Silent Valley National Park due to sharing border with Mukuruthi National Park.* The extent of Eco-sensitive Zone at various direction of the National Park are given below:

Direction	Extent
North	0 - 1.5 kilometer
North – East	2.6 - 5.6 kilometer
East	4.3 - 6.7 kilometer
South – East	4.0 - 9.8 kilometer
South	0.5 - 5.6 Kilometer
South – West	1.8 - 4.9 kilometer
West	1.0 - 4.1 kilometer
North – West	1.4 - 3.8 kilometer

- (2) The boundary description of Silent Valley National Park and its Eco-sensitive Zone is appended in **Annexure-I**.
- (3) The maps of the Silent Valley National Park demarcating Eco-sensitive Zone along with boundary details and latitudes and longitudes are appended as **Annexure-IIA** and **Annexure-IIB**.
- (4) Lists of geo-coordinates of the boundary of Silent Valley National Park and Eco-sensitive Zone are given in Table **A** and Table **B** of **Annexure-III**.
- (5) The list of villages falling in the Eco-sensitive Zone along with their geo co-ordinates at prominent points is appended as **Annexure-IV**.
2. **Zonal Master Plan for Eco-sensitive Zone.**-(1) The State Government shall, for the purposes of the Eco-sensitive Zone prepare a Zonal Master Plan within a period of two years from the date of publication of this notification in the Official Gazette, in consultation with local people and adhering to the stipulations given in this notification for approval of the competent authority of State.
- (1) The Zonal Master Plan for the Eco-sensitive Zone shall be prepared by the State Government in such manner as is specified in this notification and also in consonance with the relevant Central and State laws and the guidelines issued by the Central Government, if any.
- (2) The Zonal Master Plan shall be prepared in consultation with the following Departments of the State Government, for integrating the ecological and environmental considerations into the said plan: -
- Environment;
 - Forest and Wildlife;
 - Agriculture;
 - Revenue;
 - Urban Development;
 - Tourism;
 - Rural Development;
 - Irrigation and Flood Control;
 - Municipal;

- (x) Panchayati Raj;
 - (xi) Public Works Department.
- (3) The Zonal Master Plan shall not impose any restriction on the approved existing land use, infrastructure and activities, unless so specified in this notification and the Zonal Master Plan shall factor in improvement of all infrastructure and activities to be more efficient and eco-friendly.
 - (4) The Zonal Master Plan shall provide for restoration of denuded areas, conservation of existing water bodies, management of catchment areas, watershed management, groundwater management, soil and moisture conservation, needs of local community and such other aspects of the ecology and environment that need attention.
 - (5) The Zonal Master Plan shall demarcate all the existing worshipping places, villages and urban settlements, types and kinds of forests, agricultural areas, fertile lands, green area, such as, parks and like places, horticultural areas, orchards, lakes and other water bodies with supporting maps giving details of existing and proposed land use features.
 - (6) The Zonal Master Plan shall regulate development in Eco-sensitive Zone and adhere to prohibited and regulated activities listed in the Table in paragraph 4 and also ensure and promote eco-friendly development for security of local communities' livelihood.
 - (7) The Zonal Master Plan shall be co-terminus with the Regional Development Plan.
 - (8) The Zonal Master Plan so approved shall be the reference document for the Monitoring Committee for carrying out its functions of monitoring in accordance with the provisions of this notification.
- 3. Measures to be taken by the State Government.-** The State Government shall take the following measures for giving effect to the provisions of this notification, namely:-
- (1) **Land use.**— (a) Forests, horticulture areas, agricultural areas, parks and open spaces earmarked for recreational purposes in the Eco-sensitive Zone shall not be used or converted into areas for commercial or residential or industrial activities:

Provided that the conversion of agricultural and other lands, for the purposes other than that specified at part (a) above, within the Eco-sensitive Zone may be permitted on the recommendation of the Monitoring Committee, and with the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of Central Government or State Government as applicable and *vide* provisions of this Notification, to meet the residential needs of the local residents and for activities such as:-

 - (i) widening and strengthening of existing roads and construction of new roads;
 - (ii) construction and renovation of infrastructure and civic amenities;
 - (iii) small scale industries not causing pollution;
 - (iv) cottage industries including village industries; convenience stores and local amenities supporting eco-tourism including home stay; and
 - (v) promoted activities given under paragraph 4:

Provided further that no use of tribal land shall be permitted for commercial and industrial development activities without the prior approval of the competent authority under Regional Town Planning Act and other rules and regulations of the State Government and without compliance of the provisions of Article 244 of the Constitution or the law for the time being in force, including the Scheduled Tribes and Other Traditional Forest Dwellers (Recognition of Forest Rights) Act, 2006 (2 of 2007):

Provided also that any error appearing in the land records within the Eco-sensitive Zone shall be corrected by the State Government, after obtaining the views of Monitoring Committee, once in each case and the correction of said error shall be intimated to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change:

Provided also that the correction of error shall not include change of land use in any case except as provided under this sub-paragraph.
 - (b) Efforts shall be made to reforest the unused or unproductive agricultural areas with afforestation and habitat restoration activities.

- (2) **Natural water bodies.**-The catchment areas of all natural springs shall be identified and plans for their conservation and rejuvenation shall be incorporated in the Zonal Master Plan and the guidelines shall be drawn up by the State Government in such a manner as to prohibit development activities at or near these areas which are detrimental to such areas.
- (3) **Tourism or Eco-tourism.**- (a) All new eco-tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be as per the Tourism Master Plan for the Eco-sensitive Zone.
- (b) The Eco-Tourism Master Plan shall be prepared by the State Department of Tourism in consultation with State Departments of Environment and Forests.
- (c) The Tourism Master Plan shall form a component of the Zonal Master Plan.
- (d) The Tourism Master Plan shall be drawn based on the study of carrying capacity of the Eco-sensitive Zone.
- (e) The activities of eco-tourism shall be regulated as under, namely:-
- (i) new construction of hotels and resorts shall not be allowed within one kilometre from the boundary of the protected area or upto the extent of the Eco-sensitive Zone whichever is nearer:
- Provided that beyond the distance of one kilometre from the boundary of the protected area till the extent of the Eco-sensitive Zone, the establishment of new hotels and resorts shall be allowed only in pre-defined and designated areas for eco-tourism facilities as per Tourism Master Plan;
- (ii) all new tourism activities or expansion of existing tourism activities within the Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the guidelines issued by the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change and the eco-tourism guidelines issued by National Tiger Conservation Authority (as amended from time to time) with emphasis on eco-tourism, eco-education and eco-development;
- (iii) until the Zonal Master Plan is approved, development for tourism and expansion of existing tourism activities shall be permitted by the concerned regulatory authorities based on the actual site specific scrutiny and recommendation of the Monitoring Committee and no new hotel, resort or commercial establishment construction shall be permitted within Eco-sensitive Zone area.
- (4) **Natural heritage.**- All sites of valuable natural heritage in the Eco-sensitive Zone, such as the gene pool reserve areas, rock formations, waterfalls, springs, gorges, groves, caves, points, walks, rides, cliffs, etc. shall be identified and a heritage conservation plan shall be drawn up for their preservation and conservation as a part of the Zonal Master Plan.
- (5) **Man-made heritage sites.**- Buildings, structures, artefacts, areas and precincts of historical, architectural, aesthetic, and cultural significance shall be identified in the Eco-sensitive Zone and heritage conservation plan for their conservation shall be prepared as part of the Zonal Master Plan.
- (6) **Noise pollution.** - Prevention and control of noise pollution in the Eco-sensitive Zone shall be complied in accordance with the provisions of the Noise Pollution (Regulation and Control) Rules, 2000 under the Environment Act.
- (7) **Air pollution.**- Prevention and control of air pollution in the Eco-sensitive Zone shall be compiled in accordance with the provisions of the Air (Prevention and Control of Pollution) Act, 1981 (14 of 1981) and the rules made thereunder.
- (8) **Discharge of effluents.**- Discharge of treated effluent in Eco-sensitive Zone shall be in accordance with the provisions of the General Standards for Discharge of Environmental Pollutants covered under the Environment Act and the rules made thereunder or standards stipulated by State Government whichever is more stringent.
- (9) **Solid wastes.**- Disposal and Management of solid wastes shall be as under:-
- (i) the solid waste disposal and management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Solid Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number S.O. 1357

(E), dated the 8th April, 2016; the inorganic material may be disposed in an environmental acceptable manner at site identified outside the Eco-sensitive Zone;

- (ii) safe and Environmentally Sound Management (ESM) of Solid wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within Eco-sensitive Zone.

(10) Bio-Medical Waste.— Bio-Medical Waste Management shall be as under:-

- (i) the Bio-Medical Waste disposal in the Eco-sensitive Zone shall be carried out in accordance with the Bio-Medical Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 343 (E), dated the 28th March, 2016.
- (ii) safe and Environmentally Sound Management of Bio-Medical Wastes in conformity with the existing rules and regulations using identified technologies may be allowed within the Eco-sensitive Zone.

(11) Plastic waste management.— The plastic waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Plastic Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 340(E), dated the 18th March, 2016, as amended from time to time.

(12) Construction and demolition waste management.— The construction and demolition waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the Construction and Demolition Waste Management Rules, 2016 published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change *vide* notification number G.S.R. 317(E), dated the 29th March, 2016, as amended from time to time.

(13) E-waste.— The e - waste management in the Eco-sensitive Zone shall be carried out as per the provisions of the E-Waste Management Rules, 2016, published by the Government of India in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, as amended from time to time.

(14) Vehicular traffic.— The vehicular movement of traffic shall be regulated in a habitat friendly manner and specific provisions in this regard shall be incorporated in the Zonal Master Plan and till such time as the Zonal Master plan is prepared and approved by the Competent Authority in the State Government, the Monitoring Committee shall monitor compliance of vehicular movement under the relevant Acts and the rules and regulations made thereunder.

(15) Vehicular pollution.— Prevention and control of vehicular pollution shall be in compliance with applicable laws and efforts shall be made for use of cleaner fuels.

(16) Industrial units.— (i) On or after the publication of this notification in the Official Gazette, no new polluting industries shall be permitted to be set up within the Eco-sensitive Zone.

- (ii) Only non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per the classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless so specified in this notification, and in addition, the non-polluting cottage industries shall be promoted.

(17) Protection of hill slopes.— The protection of hill slopes shall be as under:-

- (a) the Zonal Master Plan shall indicate areas on hill slopes where no construction shall be permitted;
- (b) construction on existing steep hill slopes or slopes with a high degree of erosion shall not be permitted.

4. List of activities prohibited or to be regulated within Eco-sensitive Zone.— All activities in the Eco sensitive Zone shall be governed by the provisions of the Environment Act and the rules made there under including the Coastal Regulation Zone, 2011 and the Environmental Impact Assessment Notification, 2006 and other applicable laws including the Forest (Conservation) Act, 1980 (69 of 1980), the Indian Forest Act, 1927 (16 of 1927), the Wildlife (Protection) Act 1972 (53 of 1972), and amendments made thereto and be regulated in the manner specified in the Table below, namely:-

TABLE

S. No. (1)	Activity (2)	Description (3)
A. Prohibited Activities		
1.	Commercial mining, stone quarrying and crushing units.	(a) All new and existing mining (minor and major minerals), stone quarrying and crushing units shall be prohibited with immediate effect except for meeting the domestic needs of bona fide local residents including digging of earth for construction or repair of houses within the Eco-sensitive Zone; (b) The mining operations shall be carried out in accordance with the order of the Hon'ble Supreme Court dated the 4 th August, 2006 in the matter of T.N. Godavarman Thirumulpad Vs. Union of India in W.P.(C) No.202 of 1995 and dated the 21 st April, 2014 in the matter of Goa Foundation Vs. Union of India in W.P.(C) No.435 of 2012.
2.	Setting of industries causing pollution (Water, Air, Soil, Noise, etc.).	New industries and expansion of existing polluting industries in the Eco-sensitive Zone shall not be permitted: Provided that non-polluting industries shall be allowed within Eco-sensitive Zone as per classification of Industries in the guidelines issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016, unless otherwise specified in this notification and in addition the non-polluting cottage industries shall be promoted.
3.	Establishment of major hydro-electric project.	Prohibited.
4.	Use or production or processing of any hazardous substances.	Prohibited.
5.	Discharge of untreated effluents in natural water bodies or land area.	Prohibited.
6.	Setting up of new saw mills.	New or expansion of existing saw mills shall not be permitted within the Eco-sensitive Zone.
7.	Setting up of brick kilns.	Prohibited.
B. Regulated Activities		
8.	Commercial establishment of hotels and resorts.	No new commercial hotels and resorts shall be permitted within one kilometer of the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone, whichever is nearer, except for small temporary structures for eco-tourism activities: Provided that, beyond one kilometer from the boundary of the protected area or upto the extent of Eco-sensitive Zone whichever is nearer, all new tourist activities or expansion of existing activities shall be in conformity with the Tourism Master Plan and guidelines as applicable.
9.	Construction activities.	(a) New commercial construction of any kind shall not be permitted within one kilometer from the boundary of the protected area or upto extent of the Eco-sensitive Zone, whichever is nearer:

		<p>Provided that, local people shall be permitted to undertake construction in their land for their use including the activities mentioned in sub-paragraph (1) of paragraph 3 as per building bye-laws to meet the residential needs of the local residents.</p> <p>Provided further that the construction activity related to small scale industries not causing pollution shall be regulated and kept at the minimum, with the prior permission from the competent authority as per applicable rules and regulations, if any.</p> <p>(b) Beyond one kilometer it shall be regulated as per the Zonal Master Plan.</p>
10.	Small scale non polluting industries.	Non polluting industries as per classification of industries issued by the Central Pollution Control Board in February, 2016 and non-hazardous, small-scale and service industry, agriculture, floriculture, horticulture or agro-based industry producing products from indigenous materials from the Eco-sensitive Zone shall be permitted by the competent Authority.
11.	Felling of trees.	<p>(a) There shall be no felling of trees in the forest or Government or revenue or private lands without prior permission of the Competent Authority in the State Government.</p> <p>(b) The felling of trees shall be regulated in accordance with the provisions of the concerned Central or State Act and the rules made thereunder.</p>
12.	Collection of Forest produce or Non-Timber Forest produce.	Regulated as per the applicable laws.
13.	Erection of electrical and communication towers and laying of cables and other infrastructures.	Regulated under applicable laws (underground cabling may be promoted).
14.	Infrastructure including civic amenities.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulations available guidelines.
15.	Widening and strengthening of existing roads and construction of new roads.	Taking measures of mitigation as per the applicable laws, rules and regulation and available guidelines.
16.	Undertaking other activities related to tourism like flying over the Eco-sensitive Zone area by hot air balloon, helicopter, drones, Microlites, etc.	Regulated as per the applicable laws.
17.	Protection of hill slopes and river banks.	Regulated as per the applicable laws.
18.	Movement of vehicular traffic at night.	Regulated for commercial purpose under applicable laws.
19.	Ongoing agriculture and horticulture practices by local communities along with dairies, dairy farming, aquaculture and fisheries.	Permitted as per the applicable laws for use of locals.
20.	Establishment of large-scale commercial livestock and poultry	Regulated (except otherwise provided) as per the applicable laws except for meeting local needs.

	farms by firms, corporate and companies.	
21.	Discharge of treated waste water or effluents in natural water bodies or land area.	The discharge of treated waste water or effluents shall be avoided to enter into the water bodies and efforts shall be made for recycle and reuse of treated waste water. Otherwise the discharge of treated waste water or effluent shall be regulated as per the applicable laws.
22.	Establishment of solid waste disposal site and common incineration facility for solid and bio-medical waste.	Regulated as per the applicable laws.
23.	Commercial extraction of surface and ground water.	Regulated as per the applicable laws.
24.	Solid waste management.	Regulated as per the applicable laws.
25.	Introduction of exotic species.	Regulated as per the applicable laws.
26.	Eco-tourism.	Regulated as per the applicable laws.
27.	Use of polythene bags.	Regulated as per the applicable laws.
28.	Commercial sign boards and hoardings.	Regulated as per the applicable laws.
29.	Open Well, Borewell, etc. for agriculture and other usages.	Regulated as per the applicable laws.
C. Promoted Activities		
30.	Rain water harvesting.	Shall be actively promoted.
31.	Organic farming.	Shall be actively promoted.
32.	Adoption of green technology for all activities.	Shall be actively promoted.
33.	Cottage industries including village artisans, etc.	Shall be actively promoted.
34.	Use of renewable energy and fuels.	Bio-gas, solar light etc. shall be actively promoted.
35.	Agro-Forestry.	Shall be actively promoted.
36.	Plantation of Horticulture and Herbals.	Shall be actively promoted.
37.	Use of eco-friendly transport.	Shall be actively promoted.
38.	Skill Development.	Shall be actively promoted.
39.	Restoration of degraded land/ forests/ habitat.	Shall be actively promoted.
40.	Environmental awareness.	Shall be actively promoted.

- 5. Monitoring Committee for Monitoring the Eco-sensitive Zone Notification.-** For effective monitoring of the provisions of this notification under sub-section (3) of section 3 of the Environment (Protection) Act, 1986, the Central Government hereby constitutes a Monitoring Committee, comprising of the following, namely:-

Sl. No.	Constituent of the Monitoring Committee	Designation
(i)	District Collector, Palakkad	Chairman, ex officio
(ii)	District Collector, Malappuram	Member;
(iii)	Member of the Legislative Assembly (MLA), Mannarkkad	Member;
(iv)	Member of the Legislative Assembly (MLA), Wandoor	Member;
(v)	District Panchayat President, Palakkad & Malappuram	Member;
(vi)	Representative of the Department of Environment, Government of Kerala	Member;
(vii)	Representative of Non-governmental Organizations working in the field of natural conservation (including heritage conservation) to be nominated by the Government of Kerala	Member;
(viii)	District Officer, Kerala State Pollution Control Board, Palakkad and Malappuram	Member;
(ix)	Member State Biodiversity Board	Member;
(x)	The Wildlife Warden, Silent Valley Division	Member-Secretary

6. Terms of reference. – (1) The Monitoring Committee shall monitor the compliance of the provisions of this notification.

- (2) The tenure of the Monitoring committee shall be for three years or till the re-constitution of the new Committee by the State Government and subsequently the Monitoring Committee shall be constituted by the State Government.
- (3) The activities that are covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forests number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006, and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change for prior environmental clearances under the provisions of the said notification.
- (4) The activities that are not covered in the Schedule to the notification of the Government of India in the erstwhile Ministry of Environment and Forest number S.O. 1533 (E), dated the 14th September, 2006 and are falling in the Eco-sensitive Zone, except for the prohibited activities as specified in the Table under paragraph 4 thereof, shall be scrutinised by the Monitoring Committee based on the actual site-specific conditions and referred to the concerned regulatory authorities.
- (5) The Member-Secretary of the Monitoring Committee or the concerned Deputy Commissioner(s) shall be competent to file complaints under section 19 of the Environment Act, against any person who contravenes the provisions of this notification.
- (6) The Monitoring Committee may invite representatives or experts from concerned Departments, representatives from industry associations or concerned stakeholders to assist in its deliberations depending on the requirements on issue to issue basis.
- (7) The Monitoring Committee shall submit the annual action taken report of its activities as on the 31st March of every year by the 30th June of that year to the Chief Wildlife Warden in the State as per proforma appended at Annexure V.
- (8) The Central Government in the Ministry of Environment, Forest and Climate Change may give such directions, as it deems fit, to the Monitoring Committee for effective discharge of its functions.

7. The Central Government and State Government may specify additional measures, if any, for giving effect to provisions of this notification.

8. The provisions of this notification shall be subject to the orders, if any passed or to be passed by the Hon'ble Supreme Court of India or High Court or the National Green Tribunal.

[F. No. 25/102/2015-ESZ-RE]

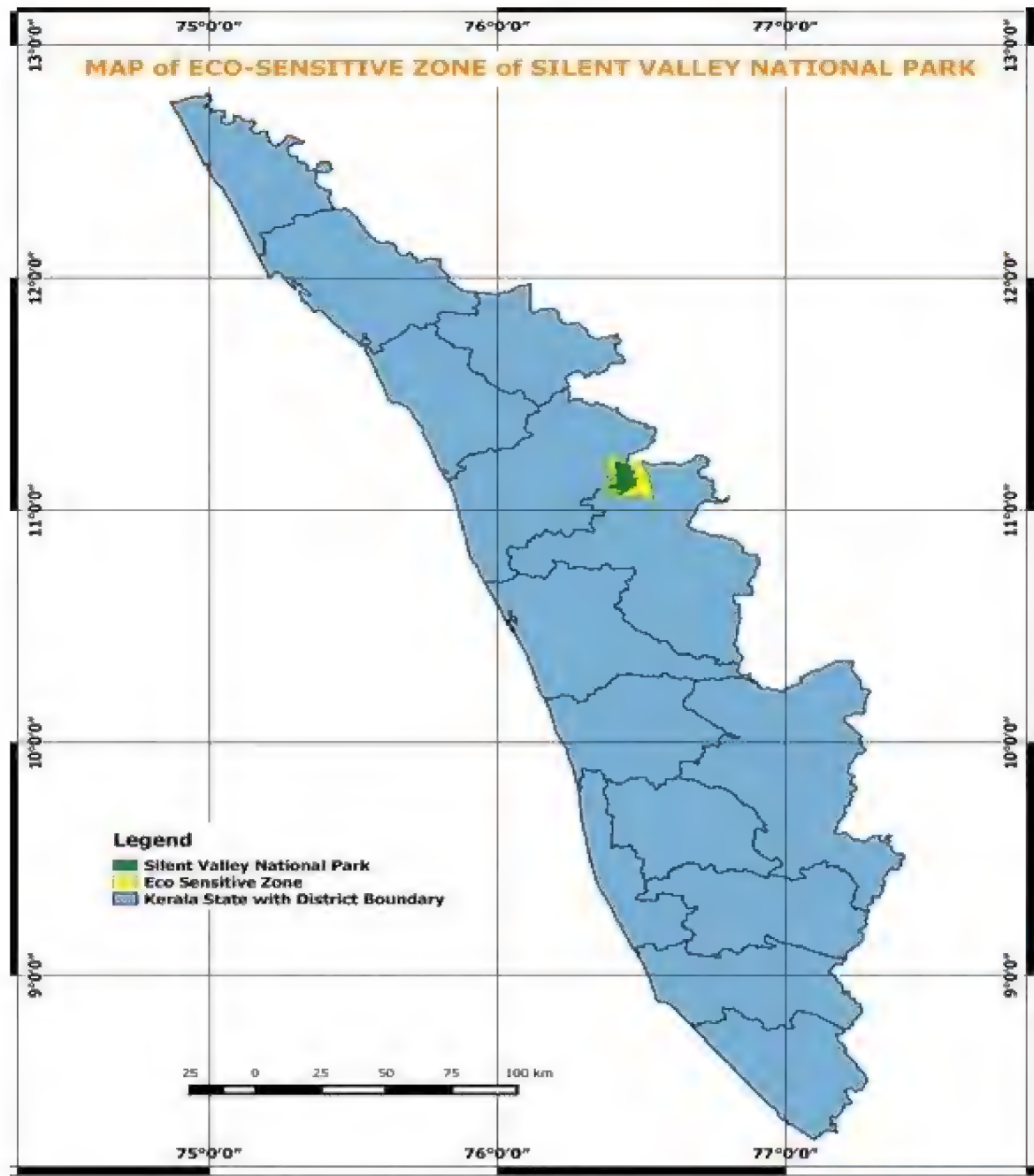
Dr. SATISH C GARKOTI,
Scientist 'G'

ANNEXURE- I

**BOUNDARY DESCRIPTION OF THE ECO-SENSITIVE ZONE OF SILENT VALLEY NATIONAL
PARK IN THE STATE KERALA**

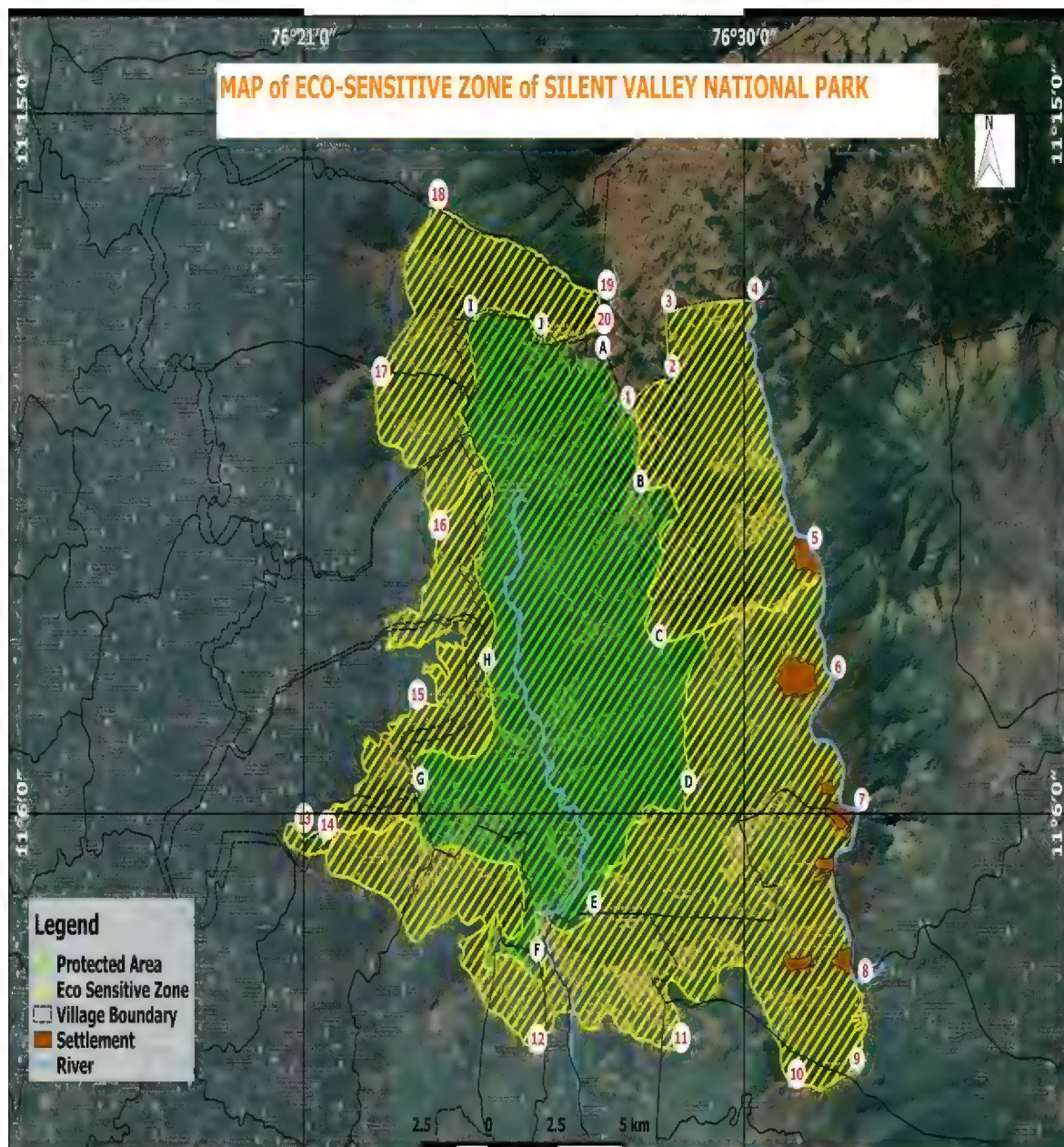
North	From Kottappuzha at the meeting point of state boundaries of Tamil Nadu and Kerala the Eco-sensitive Zone runs along interstate boundary. Till the point it meets Anginda peak the Eco-sensitive Zone width is zero and from there the Eco-sensitive Zone moves east along the state boundary and the Eco-sensitive Zone boundary moves towards south to Melethudukki (Width ranges from 4.75 Kilometer- 5.3 Kilometer).
North – East	Starts from Melethudukki till it meets Bhavani River way before Kadukumana South (Width 4.3-6.3 Kilometer).
East	From Kadukumana South and moves along Bhavani River which pass Chindakki towards the south. The Eastern boundary ends around the point where the river has flown past Thadikkund for almost a Kilometer (Width 4.5-6.3 Kilometer).
South-east	The South-East boundary leads along Bhavani River till Mandanpottithodu. From Mandampottithodu towards west along southern boundary of Attapady forest range up to North Eastern Boundary of Thathengalam Vested Forests (VFC-1) of Mannarkkad Range and ends at Thathengalam top (Width 3.2-9.8 Kilometer).
South	From Thathengalam top the southern boundary moves towards Vanamppara. The minimum width of Eco-sensitive Zone here is 0.5 Kilometer while the maximum is 2.6 Kilometer.
South-west	From Vanamppara the boundary moves towards the Palakkad-Malappuram District boundary and proceeds to Kannampally (Width 1.75 – 5 Kilometer).
West	The Western part of the Eco-sensitive Zone boundary extends from Kannampally to Atti. The minimum width of ESZ here is 1 Kilometer while the maximum width is 3.1 Kilometer
North-west	The Eco-sensitive Zone boundary leads from Atti towards Kottappuzha and meets the inter- state boundary. The width ranges from 1.3 Kilometer – 3.3 Kilometer.

ANNEXURE- IIA

**LOCATION MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF SILENT VALLEY NATIONAL PARK IN THE
STATE OF KERALA**

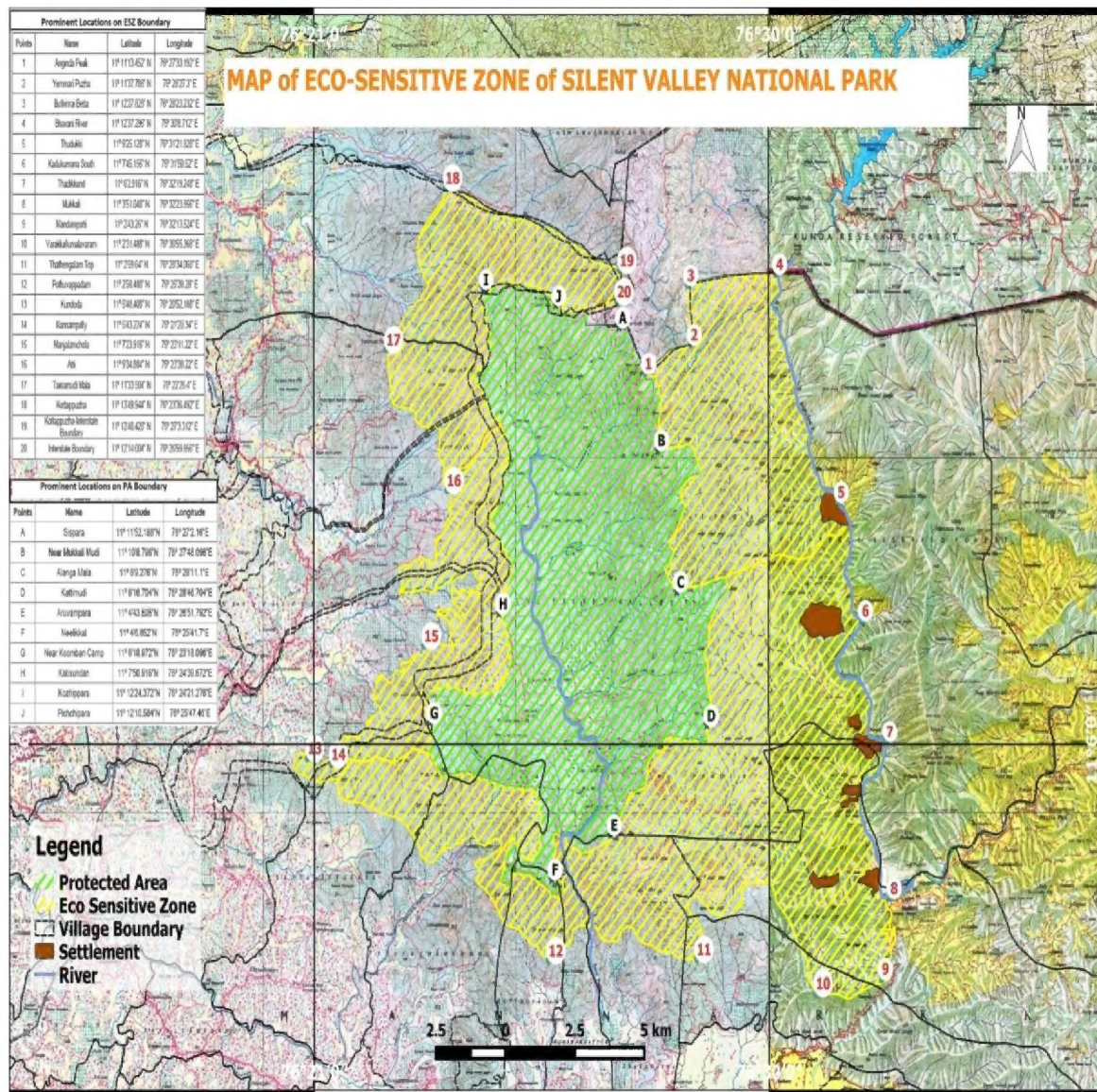
ANNEXURE- IIB

**GOOGLE IMAGE OF ECO-SENSITIVE ZONE OF SILENT VALLEY NATIONAL PARK ALONG
WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS**



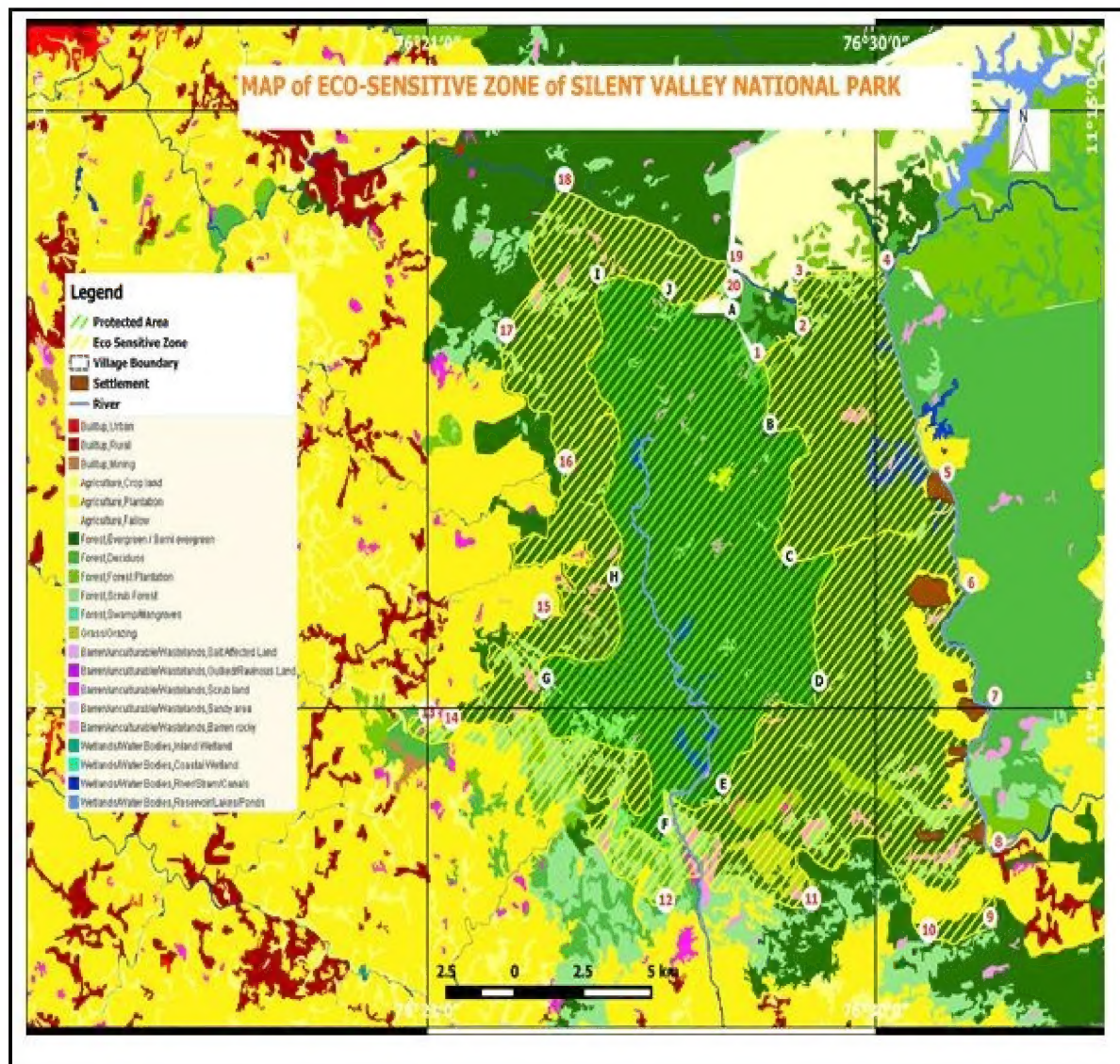
ANNEXURE- IIC

**MAP SHOWING LANDUSE PATTERN OF ECO-SENSITIVE ZONE OF SILENT VALLEY
NATIONAL PARK ALONG WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS**



ANNEXURE- IID

**LANDUSE MAP OF ECO-SENSITIVE ZONE OF SILENT VALLEY NATIONAL PARK ALONG
WITH LATITUDE AND LONGITUDE OF PROMINENT LOCATIONS**



ANNEXURE-III

**TABLE A: GEO- COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF SILENT VALLEY
NATIONAL PARK**

Identification of Prominent Locations	Name	Latitude	Longitude
A	Sispara	11°11'52.188"N	76°27'2.16"E
B	Near Mukkali Mudi	11°10'8.796"N	76°27'48.096"E
C	Alanga Mala	11°8'9.276"N	76°28'11.1"E
D	Kattimudi	11°6'16.704"N	76°28'46.704"E
E	Aruvampara	11°4'43.608"N	76°26'51.792"E
F	Neelikkal	11°4'6.852"N	76°25'41.7"E
G	Near Koomban Camp	11°6'18.972"N	76°23'18.096"E
H	Katisundan	11°7'50.916"N	76°24'39.672"E
I	Kozhippara	11°12'24.372"N	76°24'21.276"E
J	Pichchipara	11°12'10.584"N	76°25'47.46"E

TABLE B: GEO-COORDINATES OF PROMINENT LOCATIONS OF ECO-SENSITIVE ZONE

Identification of Prominent Locations	Name	Latitude	Longitude
1	Anginda Peak	11°11'13.452" N	76°27'33.192" E
2	Yemmari Puzha	11°11'37.788" N	76°28'27.3" E
3	Buthinrai Betta	11°12'27.828" N	76°28'23.232" E
4	Bhavani River	11°12'37.296" N	76°30'8.712" E
5	Thudukki	11°9'25.128" N	76°31'21.828" E
6	Kadukumana South	11°7'45.156" N	76°31'50.52" E
7	Thadikkund	11°6'2.916" N	76°32'19.248" E
8	Mukkali	11°3'51.048" N	76°32'23.856" E
9	Mandampotti	11°2'43.26" N	76°32'13.524" E
10	Varakkallumalavaram	11°2'31.488" N	76°30'55.368" E
11	Thathengalam Top	11°2'59.64" N	76°28'34.068" E
12	Pothuvappadam	11°2'58.488" N	76°25'38.28" E
13	Kundoda	11°5'48.408" N	76°20'52.188" E
14	Kannampally	11°5'43.224" N	76°21'20.34" E
15	Manjalanchola	11°7'23.916" N	76°23'11.22" E
16	Atti	11°9'34.884" N	76°23'38.22" E
17	Tainamudi Mala	11°11'33.504" N	76°22'26.4" E
18	Kottappuzha	11°13'49.944" N	76°23'36.492" E
19	Kottappuzha-Interstate Boundary	11°12'40.428" N	76°27'3.312" E
20	Interstate Boundary	11°12'14.004" N	76°26'59.856" E

ANNEXURE-IV

**LIST OF VILLAGES COMING UNDER ECO-SENSITIVE ZONE OF SILENT VALLEY NATIONAL
PARK ALONG WITH GEO-COORDINATES**

Sl. No	Village	Taluk	District	Geo coordinates		Status (Partial/Full)
1	Kallamala	Mannarkkad	Palakkad	11° 3'36.88"N	76°32'25.70"E	Partial
2	Padavayal	Mannarkkad	Palakkad	11° 9'4.81"N	76°31'30.30"E	Partial
3	Palakayam	Mannarkkad	Palakkad	11° 3'31.33"N	76°29'8.50"E	Partial
4	Payyanadam	Mannarkkad	Palakkad	11° 3'12.81"N	76°26'5.20"E	Partial
5	Mannarkkad	Mannarkkad	Palakkad	11° 3'15.23"N	76°27'25.09"E	Partial
6	Allanallur III	Mannarkkad	Palakkad	11° 5'1.18"N	76°22'15.63"E	Partial
7	Kottopadam I	Mannarkkad	Palakkad	11° 3'33.84"N	76°24'40.98"E	Partial
8	Kottopadam III	Mannarkkad	Palakkad	11° 3'11.92"N	76°25'17.18"E	Partial
9	Karuvarakundu	Nilambur	Malappuram	11° 6'59.38"N	76°22'35.11"E	Partial
10	Kerala Estate	Nilambur	Malappuram	11° 8'42.15"N	76°23'24.42"E	Partial
11	Chokkad	Nilambur	Malappuram	11°13'3.54"N	76°23'3.58"E	Partial
12	Kalikavu	Nilambur	Malappuram	11°11'2.57"N	76°22'30.28"E	Partial

ANNEXURE –V

Performa of Action Taken Report:-

1. Number and date of meetings.
2. Minutes of the meetings: (mention noteworthy points. Attach minutes of the meeting as separate Annexure).
3. Status of preparation of Zonal Master Plan including Tourism Master Plan.
4. Summary of cases dealt with rectification of error apparent on face of land record (Eco-sensitive Zone wise). Details may be attached as Annexure.
5. Summary of cases scrutinised for activities covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
6. Summary of cases scrutinised for activities not covered under the Environment Impact Assessment Notification, 2006 (Details may be attached as separate Annexure).
7. Summary of complaints lodged under section 19 of the Environment (Protection) Act, 1986.
8. Any other matter of importance.